जिनागम

धर्म-परिवार-समाज-व्यवसाय का समन्वय

समस्त जैन समाज को एकजुट करने वाली एकमात्र पत्रिका

वर्ष -२८ अंक -०७ मार्च २०२६ सम्पादक-बिजय कुमार जैन पृष्ठ ५२ मूल्य - १५० रूपए प्रति

दिगम्बर

जैन

श्वेताम्बर

हम सब जैन हैं

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

चलो पुणे! चलो पुणे!

महाराष्ट्र की सांस्कृतिक नगरी

राजस्थान स्थापना दिवस

ऐतिहासिक कार्यक्रम का आयोजन

३० मार्च ३० मार्च

आपणों राजस्थान

गणेश क्रीड़ा स्थल, स्वारगेट, पुणे, महाराष्ट्र, भारत में

सामाजिक-सांस्कृतिक-ऐतिहासिक-मनोरंजन-B_2B-पारंपरिक व्यंजनों के साथ

विक्रम संवत क्यों और कब से?

और भी बहुत कुछ.... संपर्क करें ९३२२३०७९०८

पत्रिका द्वारा होने वाली आय भारतीय भाषायी संस्कृति संवर्धन व हिंदी बनें राष्ट्रभाषा अभियान की सफलता पर खर्च किया जा रहा है

www.kljindia.com

KLJ Group

A NAME YOU CAN TRUST UPON

Total Solution in Plasticizers & Polymer Compounds

PLASTICIZERS

PHTHALATES | ADIPATES | TRIMELLITATES | CITRATES | STEARATES | SEBACATES | DIBENZOATES | TERE - PHTHALATES | BIO PLASTICIZERS | MALEATES | ESBO

CHLORINATED PARAFFIN (CP)

vLCCP | LCCP | MCCP | SCCP

POLYMER COMPOUNDS

PVC | XLPE-SIOPLAS | XLPE-PEROXIDE | SEMI CONDUCTIVE | EPR | ZHFR | PO | HDPE | PLENE | TPR | TPE | EVA | ENGINEERING PLASTICS | MASTER BATCH - PVC, PE & UNIVERSAL

BENZ PRODUCTS

BENZYL-ALCOHOL | BENZADEHYDE | BENZYL CHLORIDE | DI BENZYL ETHER | BENZYL BENZOATE

CHLOR-ALKALI

CAUSTIC SODA PRILLS | CALCIUM CHLORIDE | CHLORINATED PARAFFINS | HYDROCHLORIC ACID | SODIUM HYPOCHLORITE

PETROCHEMICALS & POLYMER TRADING | REAL ESTATE DEVELOPMENT

Corporate Office:
KLJ House, 8A, Shivaji Marg, Najafgarh Road, New Delhi-110 015, India
Tel.: +91 11 41427427/28/29, Email: delhi@kljindia.com

Branch Offices:
Mumbai | Chennai | Kolkata
Ahmedabad (India) | Singapore | Dubai

Plants:
Silvassa | Bharuch | Agra (India)
Thailand | Qatar

#22-086/KLJ

शासनपति श्रमण भगवान महावीर स्वामी के जन्मोत्सव पर विनम्र भाववंदना!

''लाखों शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने से बेहतर है खुद पर विजय प्राप्त करना''

-भगवान महावीर

श्रद्धेय भवरलाल हिरालाल जैन

दलिचंद-लिलाबाई, श्रीमती ताराबाई, श्रीमती सुनंदा, अशोक-ज्योती

विजय-निर्मला, राहुल-दर्शना, अनिल-निशा, अजित-शोभना, अतुल-भावना, अथांग-अंबिका, अभेद्य-आचल

आरोही, अभंग, आत्मन, अन्मय, अर्थम, अथिना

एवं समस्त जैन (चोरडिया) परिवार

भवरलाल ॲण्ड कांताबाई जैन फौंडेशन, जलगाँव
करुणा.. कल्पना.. कष्ट!

जैन इरिगेशन सिस्टम्स् लि.™
छोटे छोटे कदम. आसमाँ छुनेका दम.®

जैन फार्म फ्रेश™
जैन फार्म फ्रेश फूड्स लि.
A JAIN IRRIGATION COMPANY

अनुभूति स्कूल
अनुभवाधारित निवासी आंतरराष्ट्रीय विद्यानिकेतन

गाँधी रिसर्च फाउण्डेशन
• सत्य • अहिंसा • शांती

जैन हिल्स्, जलगाव-४२५००१, ई-मेल: jisl@jains.com; वेबसाईट: www.jains.com

भारत • अमेरिका • चीन • ऑस्ट्रेलिया • इस्त्रायल • टर्की • ग्रीस • फ्रान्स • स्पेन • युनायटेड किंगडम

ब्राझील • अर्जेंटिना • चिली • मेक्सिको • बेल्जियम • आयर्लंड • टर्की

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Tariff Card

Monthly Magazine	JINAGAM
Reader Ship	17,000
Readers	All Jains
Release Date	10th date of Every Month
Magazine Size	A4
Print Area	19cm x 24 cm
Print in	Art Paper/Card

विज्ञापन दर 1st November 2022

ADVERTISEMENT RATE

Front Cover (With Photo/Sponsorship) Size : 185 x 225 mm	**55,000/**	+5% GST
Front Page (Cover Inside) Size : 185 x 225 mm	**33,000/**	+5% GST
Back Page (Cover) Size : 185 x 225 mm	**35,000/**	+5% GST
Back Page (Inside Cover) Size : 185 x 225 mm	**31,000/-**	+5% GST
Opening of Magazine/3rd Page Size : 185 x 225 mm	**32,000/-**	+5% GST
Centre Page Size : 185 x 225 mm	**40,000/-**	+5% GST
Special Position on Editorial Page (if available) Quarter Page / Strip) Size : 185 x 50 mm	**8,000/-**	+5% GST
Full Page (Inside) Size : 185 x 225 mm	**22,000/-**	+5% GST
Half Page Size : 185 x 110 mm	**12,000/-**	+5% GST
Quarter Page Size : 90 x 110 mm	**6,000/-**	+5% GST

* Per Insertion

अगला अंक

जैन एकता

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Dilip Surana

Aanad Surana

MICRO LABS

MICRO LABS LIMITED

Bangalore

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
INDIA GATE का नाम
Remove INDIA Name From The Constitution
'भारतद्वार' लिखवायें

BEST COMPLIMENTS FROM:

विश्वा जैन, नीलम जैन,
अम्बरीश जैन, आरती जैन, गौतम जैन, नेहा जैन,
अमित जैन, रेवा जैन

KGOC

kangaro
Stay Sorted.

MUNIX
Smart. Sharp. Sure.

MILES
a tool for every hand

KOHE
A cut above.

Mfrs. & Exporters : Staplers, Staples, Staple Removers, Paper Punches, Gun Tackers, Tape Tool, Pneumatic Tools, Industrial Staples, Stitching wire, Scissors & Kitchen Essentials etc.

Kangaro Industries (Regd.)
Kangaro Industries Limited
Kanin (India)
Munix (India) Pvt. Ltd.
KGOC Global LLP

B-XXX-6754, Focal Point, LUDHIANA-141 010. (INDIA)
Tel: 91-161-2679000, 6603300, Fax: 91-161-2674903, 2672158
e-mail: info@kgocglobal.com

www.KGOCglobal.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

२९ वें वर्ष में प्रवेश

वर्ष -२८, अंक ०७, मार्च २०२६

जिनागम
१२ अंकों का वार्षिक मूल्य रू.२१००/-

सम्पादक - बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
भारत को भारत ही कहा जाए
का आव्हान करने वाला एक भारतीय

उपसंपादक - संतोष जैन 'विमल'
कार्यकारी सम्पादक - अनुपमा शर्मा (दाधीच)
मोः ९७०२२ ०५२५२

❍ 'जिनागम' में प्रकाशित लेखों/कविताओं/समाचारों/ विज्ञापनों से पूर्व सहमत होना सम्भव नहीं है।
❍ 'जिनागम' से सम्बन्धित समस्त विवादों के लिये न्याय क्षेत्र अंधेरी, मुम्बई ही मान्य माना जायेगा।

सम्पादकीय मुख्य कार्यालय
गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्रा. लि.
बी-२१७, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत -४०० ०५९
दूरभाष :- ०२२-४०१५८०९४
अणु डाक :- mailgaylordgroup@gmail.com
अन्तरताना:- http//www.jinagam.co.in

श्वेताम्बर दिगम्बर ० **सम्पादकीय** ० दिगम्बर श्वेताम्बर

महावीर जन्म कल्याणक पर्व मनाने के साथ कुछ प्रण लेना भी है जरूरी

त्योहार आते हैं, चले जाते हैं, पर कुछ त्यौहार अमिट छाप छोड़ जाते हैं, जब वह त्यौहार मनाने के साथ हम सभी कुछ अलग कर जाते हैं।

'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व, वर्ष २०२६ को हम सभी ३१ मार्च को धूमधाम से मनाएंगे, मनाना भी चाहिए, क्योंकि जैन धर्म के अंतिम केवली तीर्थंकर महावीर ही हैं, तभी तो महावीर के बाद ना कोई तीर्थंकर हुआ, ना ही होगा, चल रहे पंचम काल में! तीर्थंकर का अर्थ तीर्थवासी, महावीर ने ऐसी-ऐसी कृतियां व मनोवांचना दी, जो हम इंसानों के लिए आज भी प्रेरणादाई है, तभी तो महावीर स्वयं तीर्थंकर वासी बन गए और हम जैन भारतीयों के दिलों में आज भी बसे हुए हैं, हम सभी जैन धर्मावलंबी मिलकर 'महावीर जन्म कल्याणक' महापर्व के रूप में मनाते हैं, क्योंकि महावीर का जन्म स्वयं के कल्याण के साथ पर के कल्याण के लिए ही तो हुआ था, मेरी आकांक्षा व मनोकांक्षा है कि विश्व में फैले जैन धर्मावलंबियों से, 'महावीर जन्म कल्याणक' पावन पर्व पर हम कुछ प्रण करें कि हम, हर दूसरे के पंथ का सम्मान करेंगे, क्योंकि सभी पंथ अपने हैं, सभी 'णमोकार मंत्र' की जय-जयकार करते हैं, हम-सभी महावीर की अहिंसा के नारे को आज भी आत्मसात किये हुए हैं, चींटी जैसी प्राणी मात्र को हम दुखी नहीं देख सकते, यही तो हम जैनों की सेवा व विचार हैं। आईए हम सब मिलकर २०२६ को 'महावीर जनकल्याणक' महापर्व पर प्रण करें कि हम सब मिलकर 'जैन एकता' के पथ पर चलेंगे, हर पंथ के गुरु भगवंतों की सेवा करेंगे, क्योंकि वे वर्तमान में हमारे लिए चलते-फिरते तीर्थंकर जो हैं, हमने तीर्थंकर महावीर को नहीं देखा, पर उनका स्वरूप वर्तमान के साधु संतों में जरूर देखा है, क्योकि ये ही हमारे जीवन को संवारते हैं।

'जैन एकता' के पथ पर चलना है। यह अभियान सफल बनाना है।

जैन धर्म के ध्वज को विश्व में लहराना है और बता देना है कि 'हम सब जैन हैं'।

जय जिनेंद्र! जय भारत!

SBI BANK
for payment

HDFC BANK
for payment

आपका अपना
- बिजय कुमार जैन
वरिष्ठ पत्रकार व सम्पादक
मो.९३२२३०७९०८

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Mob: 9448779151
Medal Hosiery Centre
283 Old Tharayapet, Bangalore, Karnatka, Bharat - 560053
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

तीर्थंकर महावीर और जैन धर्म

महावीर को वीर, अतिवीर और सन्मती के नाम से भी जाना जाता है, वे तीर्थंकर महावीर स्वामी ही थे, जिनके कारण २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों ने एक विशाल धर्म 'जैन धर्म' का रूप धारण किया। तीर्थंकर महावीर के जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में कई मत प्रचलित हैं, लेकिन उनके भारत में अवतरण को लेकर एकमत है, वे तीर्थंकर महावीर के कार्यकाल को ईराक के जराथ्रुस्ट, फिलिस्तीन के जिरेमिया, चीन के कन्फ्यूसियस तथा लाओत्से और युनान के पाइथोगोरस, प्लेटो और सुकरात के समकालीन मानते हैं। भारत वर्ष को महावीर ने गहरे तक प्रभावित किया, उनकी शिक्षाओं से तत्कालीन राजवंश खासे प्रभावित हुए और ढेरों राजाओं ने जैन धर्म को अपना राजधर्म बनाया। बिम्बसार और चंद्रगुप्त मौर्य का नाम इन राजवंशों में प्रमुखता से लिया जा सकता है, जो जैन धर्म के अनुयायी बने।

तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा को जैन धर्म का आधार बनाया, उन्होंने तत्कालीन हिन्दु समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का विरोध किया और सबको समान मानने पर जोर दिया, उन्होंने 'जियो और जीने दो' के सिद्धान्त पर जोर दिया, सबको एक समान नजर में देखने वाले तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह के साक्षात मूर्ति थे, वे किसी को भी दु:खी नहीं देखना चाहते थे।

महावीर स्वामी के उपदेश

भगवान महावीर ने अहिंसा, तप, संयम, पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ती, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का संदेश दिया। महावीर स्वामी ने यज्ञ के नाम पर होने वाले पशु-पक्षी तथा नर की बली का पूर्ण रूप से विरोध किया तथा सभी जाति और धर्म के लोगों को धर्म पालन का अधिकार बतलाया, महावीर स्वामी ने उस समय जाति-पाति और लिंग भेद को मिटाने के लिए उपदेश दिये।

प्रस्तुति

केवल किरण क्लोथिंग लिमिटेड परिवार

और

श्रीमती शांताबेन पुखराजजी रतनपरिया चौहान परिवार

KKCL

LAWMAN Pg3 integriti KILLER easies BY KILLER DÉSI BELLE

अहिंसा परमो धर्म

जियो और जीने दो

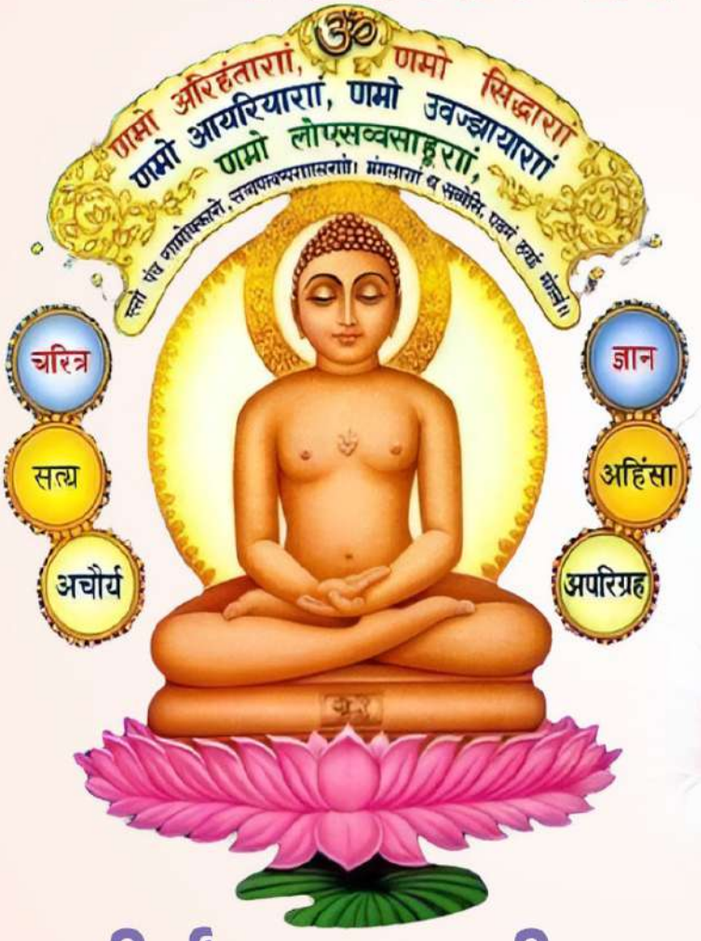

तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं

MARUTHI MEDICALS
SERVICE BEFORE SELF
SINCE 1988

ಮಾರುತಿ ಮೆಡಿಕಲ್ಸ್
ಕರ್ನಾಟಕದ ಅಗ್ರಗಣ್ಯ ಔಷಧಿ ಮಳಿಗೆ

THE LEADING MEDICAL STORE OF KARNATAKA

Call: 080-61222111 +91 76764 44443

TIMINGS : 8.00 AM TO 1.30 MIDNIGHT | NO HOLIDAYS | NO BREAKS

WE HAVE NO BRANCHES

#mahendramunotjain

ಮಾರುತಿ ಮೆಡಿಕಲ್ಸ್ ದನಿ
अंबा..!..ambaa..!
..ಅಂಬಾ..!
the voice of maruthi medicals
गावो विश्वस्य मातरः

ಹಸುವೇ ಸತ್ಯ
ಹಾಲೇ ನಿತ್ಯ
ಉಳಿಸದಿದ್ದರೆ ನಾವೇ ಮಿಥ್ಯ

Madhuban Toyota

TOYOTA

This Mahavir Jayanti,
Celebrate Mindful
Journeys With The
Toyota Urban Cruiser Hyryder.

Visit Madhuban Toyota and experience an *Awesome* drive today

URBAN CRUISER HYRYDER

Sales - Kurla | Bandra | Lower Parel | Breach Candy | Badlapur

022 4243 1999 | +91 98197 97976

TOYOTA TRUST
Buy | Sell | Exchange - Used cars

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर महावीर स्वामी जन्म कल्याणक पर्व

पूरे भारत के साथ विश्व भर वर्ष में महावीर जन्म कल्याणक पर्व जैन समाज द्वारा उत्सव के रूप में मनाया जाता है। जैन समाज द्वारा मनाए जाने वाले इस त्यौहार को महावीर जयंती के साथ-साथ महावीर जन्म कल्याणक नाम से भी जानते हैं। महावीर जन्म कल्याणक हर वर्ष चैत्र माह के १३ वें दिन मनाई जाती है, जो हमारे वर्किंग केलेन्डर के हिसाब से मार्च या अप्रैल में आता है, इस दिन हर तरह के जैन दिगम्बर-श्वेताम्बर आदि एकसाथ मिलकर इस उत्सव को मनाते हैं, तीर्थंकर महावीर के जन्म उत्सव के रूप में मनाए जाने वाले इस त्यौहार में भारत के कई राज्यों में सरकारी छुट्टी घोषित की गयी है।

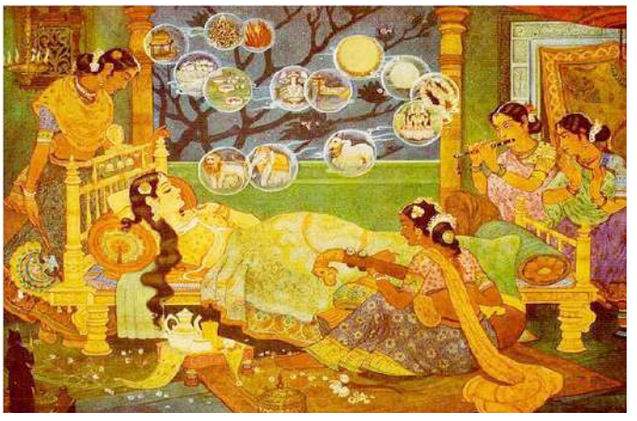

जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का जीवन उनके जन्म के ढाई हजार साल से उनके लाखों अनुयायियों के साथ ही पूरी दुनिया को अहिंसा का पाठ पढ़ा रहा है, पंचशील सिद्धान्त के प्रर्वतक और जैन धर्म के चौबिसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी अहिंसा के प्रमुख ध्वजवाहकों में है। जैन ग्रंथों के अनुसार २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ जी के मोक्ष प्राप्ति के बाद २९८ वर्ष बाद तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्म ऐसे युग में हुआ, जहां पशुबलि, हिंसा और जाति-पाति के भेदभाव का अंधविश्वास जारी था। महावीर स्वामी के जीवन को लेकर श्वेताम्बर और दिगम्बर जैनियों में कई तरह के अलग-अलग तथ्य हैं:

तीर्थंकर महावीर के जन्म और जीवन की जानकारी

तीर्थंकर महावीर का जन्म लगभग २५०० वर्ष पूर्व चैत्र शुक्ल त्रयोदशी के दिन क्षत्रियकुण्ड नगर में हुआ, तीर्थंकर महावीर की माता का नाम महारानी त्रिशला और पिता का नाम महाराज सिद्धार्थ थे, तीर्थंकर महावीर कई नामों से जाने गए उनके कुछ प्रमुख नाम वर्धमान, महावीर, सन्मति, श्रमण आदि हैं, तीर्थंकर महावीर स्वामी के भाई नंदिवर्धन और बहन सुदर्शना थी, बचपन से ही महावीर तेजस्वी और साहसी थे। किंवदंतियोंनुसार शिक्षा पूरी होने के बाद माता-पिता ने इनका विवाह राजकुमारी यशोदा के साथ कर दिया गया था।

भगवान महावीर का जन्म एक साधारण बालक के **शेष पृष्ठ १२ पर...**

SATTVIK VERIFIED
QUALITY ASSURANCE
100% VEGETARIAN

NAKODA®

Pure Ghee, Edible Oils & More...

SINCE 1978

NAtural KhaO... Dilse Apnao...™

इस महावीर जयंती, नाकोड़ा के साथ पाइए शुद्धता और सेहत का उपहार।

FREE HOME DELIVERY

also available on | Flipkart | amazon | www.nakodagheetel.com

89288 82457 / 85915 62269 / 89285 86181 / 91377 56585

NAKODA TRUSTED QUALITY OVER 35 YEARS

M/s. KEWALCHAND VINODKUMAR

K.B. Products Pvt. Ltd.

Customer Care: +91 9819475175 | info@gheetel.com

/nakodagheetel | An ISO 22000:2018 & HACCP Certified Company

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १० से ... रूप में हुआ था, इन्होंने अपनी कठिन तपस्या से अपने जीवन को अनूठा बनाया, महावीर स्वामी के जीवन के हर चरण में एक

कथा व्याप्त है, 'जिनागम' पत्रिका परिवार उनके जीवन से जुड़े कुछ चरणों तथा उसमें निहित कथाओं को उल्लेखित कर रहे हैं:

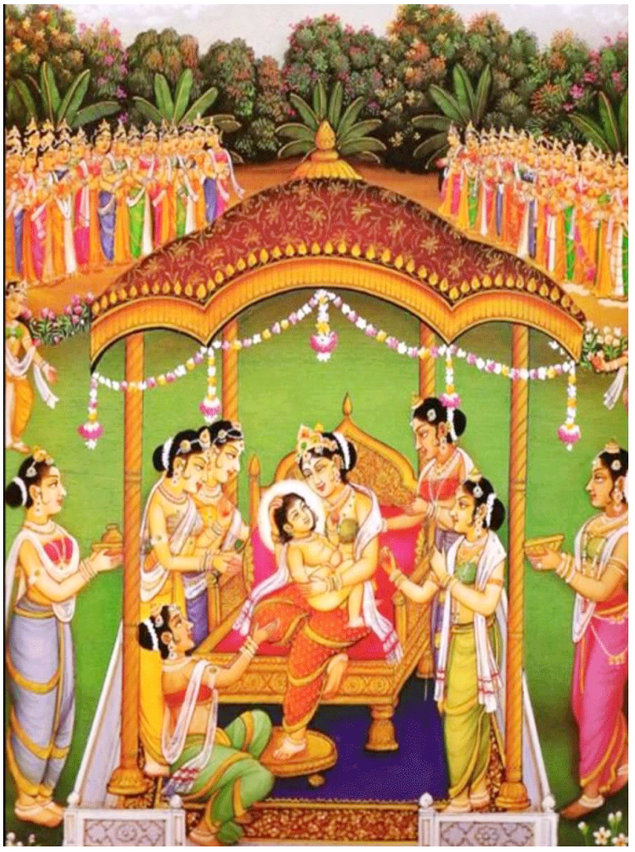

महावीर स्वामी जन्म और नामकरण संस्कार: तीर्थंकर महावीर स्वामी के जन्म के समय क्षत्रियकुण्ड गांव में दस दिनों तक उत्सव मनाया गया, सारे मित्रों-भाई बंधुओं को आमंत्रित किया गया तथा उनका खूब सत्कार किया गया, राजा सिद्धार्थ का कहना था कि जब से महावीर का जन्म उनके परिवार में हुआ, तब से उनके धन-धान्य कोष भंडार बल आदि सभी राजकीय साधनों में बहुत ही वृध्दी हुई, उन्होंने सबकी सहमति से अपने पुत्र का नाम 'वर्धमान' रखा।

महावीर स्वामी का विवाह: कहा जाता है कि महावीर स्वामी अन्तर्मुखी स्वभाव के थे, शुरुवात से ही उन्हें संसार के भोगों में कोई रुचि नहीं थी, परंतु माता-पिता की इच्छा के कारण उन्होंने वसंतपुर के महासामन्त समरवीर की पुत्री यशोदा के साथ विवाह किया, कहीं-कहीं लिखा हुआ यह भी मिलता है कि उनकी एक पुत्री हुई, जिसका नाम प्रियदर्शना रखा गया था।

तीर्थंकर महावीर स्वामी का वैराग्य: तीर्थंकर महावीर स्वामी के माता-पिता की मृत्यु के पश्चात उनके मन में वैराग्य लेने की इच्छा जागृत हुई, परंतु जब उन्होंने इसके लिए अपने बड़े भाई से आज्ञा मांगी तो भाई ने कुछ समय रुकने का आग्रह किया, तब महावीर ने अपने भाई की आज्ञा का मान रखते हुए २ वर्ष पश्चात ३० वर्ष की आयु में वैराग्य लिया, इतनी कम आयु में घर का त्याग कर 'केशलोच' के पश्चात जंगल में रहने लगे। १२ वर्ष के कठोर तप के बाद जम्बक में ऋजुपालिका नदी के तट पर एक साल्व वृक्ष के नीचे केवल ज्ञान प्राप्त हुआ, इसके बाद उन्हें 'केवलि' नाम से जाना गया तथा उनके उपदेश चारों और फैलने लगे। बड़े-बड़े राजा महावीर स्वामी के अनुयायी बनें, उनमें से बिम्बिसार भी एक थे। ३० वर्ष तक महावीर स्वामी ने त्याग, प्रेम और अहिंसा का संदेश फैलाया और बाद में वे जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर बनें और विश्व के श्रेष्ठ तीर्थंकरों में शुमार हुए।

उपसर्ग, अभिग्रह, केवलज्ञान: तीस वर्ष की आयु में तीर्थंकर महावीर स्वामी ने पूर्ण संयम के साथ श्रमण बन गये तथा दीक्षा लेते ही उन्हें केवल ज्ञान प्राप्त हो गया। दीक्षा लेने के बाद तीर्थंकर महावीर स्वामी ने बहुत कठिन तपस्या की और विभिन्न कठिन उपसर्गों को समता भाव से ग्रहण किया।

साधना के बारहवें वर्ष में महावीर स्वामी जी मेढ़िया ग्राम से कोशांम्बी आए तब उन्होंने पौष कृष्णा प्रतिपदा के दिन एक बहुत ही कठिन अभिग्रह धारण किया, इसके पश्चात साढ़े बारह वर्ष की कठिन तपस्या और साधना के बाद ऋजुबालिका नदी के किनारे महावीर स्वामी जी शाल वृक्ष के नीचे वैशाख शुक्ल दशमी के दिन केवल ज्ञान-केवल दर्शन की उपलब्धि हुई।

तीर्थंकर महावीर और जैन धर्म: महावीर को वीर, अतिवीर और सन्मती के नाम से भी जाना जाता है, वे तीर्थंकर महावीर स्वामी ही थे, जिनके कारण २३वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्तों ने एक विशाल धर्म 'जैन धर्म' का रूप धारण किया। तीर्थंकर महावीर के जन्म स्थान को लेकर विद्वानों में कई मत प्रचलित हैं, लेकिन उनके भारत में अवतरण को लेकर एकमत है, वे तीर्थंकर महावीर के कार्यकाल को ईराक के जराथ्रुस्ट, फिलिस्तीन के जिरेमिया, चीन के कन्फ्यूसियस तथा लाओत्से और युनान के पाइथोगोरस, प्लेटो और सुकरात के समकालीन मानते हैं। भारत वर्ष को महावीर ने गहरे तक प्रभावित किया, उनकी शिक्षाओं से तत्कालीन राजवंश खासे प्रभावित हुए और ढेरों राजाओं ने जैन धर्म को

अपना राजधर्म बनाया। बिम्बसार और चंद्रगुप्त मौर्य **शेष पृष्ठ १४ पर...**

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

ashika

A well-diversified
Global Financial Conglomerate

GLOBAL FAMILY OFFICE SERVICES

Serving Global Family Offices for Wealth Creation

ASHIKA INVESTMENT MANAGERS PVT LTD (CAT III AIF)

- Ashika India Select Fund
- Ashika India Alpha Fund

INVESTMENT BANKING

Helping Businesses & Start-ups to raise funds via Debt & Equity

ASHIKA FAMILY OFFICE

We Invest as an Anchor Investor across Listed & Unlisted opportunities.

dhanush

Comprehensive Online Tech Platform for Investing

MERCHANT BANKING

Listings, De-listing, Mergers & Acquisitions for corporates

INSTITUTIONAL SERVICES DESK

100+ FIIs & DIIs trade on our platform

RETAIL BROKING, MTF & DISTRIBUTION SERVICES

500+ touchpoints across the country

Trusted

YOUR ^ PARTNER IN YOUR FINANCIAL WELL-BEING

Get in touch with us:

Mr. Shrey Shah
+91 9833498734
ss@ashikagroup.com
www.ashikagroup.com

Registered Office:

Trinity, 226/1, A.J.C. Bose Road,
Kolkata – 700 020

T: (033) 4010 2500
F: (033) 40033254
E: ashika@ashikagroup.com

Corporate Office:

Altimus, Level 35, Dr. G. M Bhosale Marg,
Worli, Mumbai - 400 018

T: (022) 6372 0000
F: (022) 6611 1710
E: mumbai@ashikagroup.com

*Investment in Securities & Commodities Market are subject to market risks. Please read all the related documents carefully before investing. Clients must read Risk Disclosure Document (ROD) & Do's & Don't before investing.

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १२ से ... का नाम इन राजवंशों में प्रमुखता से लिया जा सकता है, जो जैन धर्म के अनुयायी बने। तीर्थंकर महावीर ने अहिंसा को जैन धर्म का आधार बनाया, उन्होंने तत्कालीन हिन्दु समाज में व्याप्त जाति व्यवस्था का

विरोध किया और सबको समान मानने पर जोर दिया, उन्होंने 'जियो और जीने दो' के सिद्धान्त पर जोर दिया, सबको एक समान नजर में देखने वाले तीर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह के साक्षात मूर्ति थे, वे किसी को भी दु:खी नहीं देखना चाहते थे।

महावीर स्वामी के उपदेश :

भगवान महावीर ने अहिंसा, तप, संयम, पांच महाव्रत, पांच समिति, तीन गुप्ती, अनेकान्त, अपरिग्रह एवं आत्मवाद का संदेश दिया। महावीर स्वामी ने यज्ञ के नाम पर होने वाले पशु-पक्षी तथा नर की बली का पूर्ण रूप से विरोध किया तथा सभी जाति और धर्म के लोगों को धर्म पालन का अधिकार बतलाया, महावीर स्वामी ने उस समय जाति-पाति और लिंग भेद को मिटाने के लिए उपदेश दिये।

निर्वाण: कार्तिक मास की अमावस्या को रात्री के समय तीर्थंकर महावीर स्वामी निर्वाण को प्राप्त हुये, निर्वाण के समय तीर्थंकर महावीर स्वामी की आयु ७२ वर्ष की थी।

विशेष तथ्य: तीर्थंकर महावीर:

* तीर्थंकर महावीर के 'जिओ और जीने' दो के सिद्धान्त को जन-जन तक पहुंचाने के लिए जैन धर्म के अनुयायी 'जिनागम' पत्रिका परिवार तीर्थंकर महावीर के निर्वाण दिवस को हर वर्ष कार्तिक पूर्णिमा को त्यौहार की तरह मनाते हैं, इस अवसर पर वह दीपक प्रज्वलित करते हैं।
* जैन धर्म के अनुयायियों के लिए उन्होंने पांच व्रत दिए, जिसमें अहिंसा, अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह बताया गया।
* अपनी सभी इंन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने की वजह से वे जितेन्द्रिय या 'जिन' कहलाए।

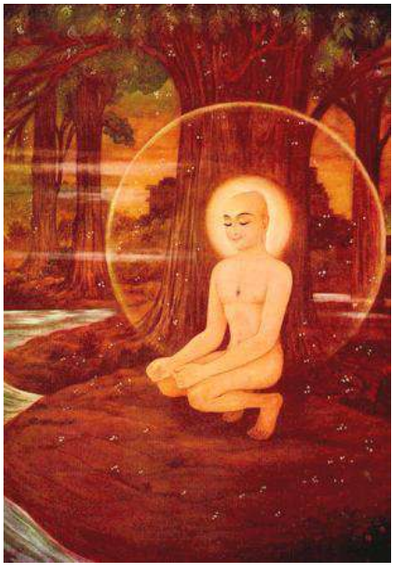

* 'जिन' से ही जैन धर्म को अपना नाम मिला।
* जैन धर्म के गुरूओं के अनुसार तीर्थंकर महावीर के कुल ११ गणधर थे, जिनमें गौतम स्वामी पहले गणधर थे।
* तीर्थंकर महावीर ने ५२७ ईसा पूर्व कार्तिक कृष्णा द्वितीया तिथि को अपनी देह का त्याग किया, देह त्याग के समय उनकी आयु ७२ वर्ष थी।
* बिहार के पावापूरी जहां उन्होंने अपनी देह को छोड़ा, जैन अनुयायियों के लिए यह पवित्र स्थल की तरह पूजित किया जाता है।
* तीर्थंकर महावीर के मोक्ष के दो सौ साल बाद, जैन धर्म श्वेताम्बर और दिगम्बर सम्प्रदायों में बंट गया।
* दिगम्बर सम्प्रदाय के जैन संत, वस्त्रों का त्याग कर देते हैं, इसलिए दिगम्बर कहलाते हैं जबकि श्वेताम्बर सम्प्रदाय के संत श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।

तीर्थंकर महावीर की शिक्षाएं: तीर्थंकर महावीर द्वारा दिए गए पंचशील सिद्धान्त ही जैन धर्म का आधार बने हैं, इस सिद्धान्त को अपनाकर ही एक अनुयायी सच्चा जैन अनुयायी बन सकता है। सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को पंचशील कहा जाता है।

सत्य– तीर्थंकर महावीर ने 'सत्य' को महान बताया है, उनके अनुसार, 'सत्य' इस दुनिया में सबसे शक्तिशाली है और एक अच्छे इंसान को किसी भी हालत में 'सच' का साथ नहीं छोड़ना चाहिए, एक बेहतर इंसान बनने के लिए जरूरी है कि हर परिस्थिति **शेष पृष्ठ १६ पर...**

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर'
रहें महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

Tarun Motta
Mob : 9820298205

TEEARCH
Architects Engineers Consultants

9 Square, Ramdas Sutrale Marg, Off Chadavarkar Lane,
Borivli West, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400 092,
Ph: 022-28928888
Email: tarunmotta@teearch.in/ teearch.teearch@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

हम सब मिलकर तीर्थंकर महावीर का जन्म कल्याणक पर्व मनाएँ
उनके सिध्दान्तों का अनुशरण कर अपने जीवन को सफल बनाएँ
तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं

D. Surendra Kumar

B/o SRI D. VEERENDRA HEGGEDE
DHARMASTHALA
VICE - PRESIDENT
S.D.M Educational Society, Ujire, D.K.

Shrutha Complex, No.19, Primrose Road,
Off. M.G. Road, Behind Prestige Meredian, Bangalore,
Karnataka, Bharat-560025. Ph.: 080-25585037
e-mail : kumar.surendra99@gmail.com

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

पृष्ठ १४ से ... में सच बोला जाए।

अहिंसा – दूसरों के प्रति हिंसा की भावना नहीं रखनी चाहिए, जितना प्रेम हम खुद से करते हैं उतना ही प्रेम दूसरों से भी करें, अहिंसा का पालन करें।

अस्तेय – दूसरों की वस्तुओं को चुराना और दूसरों की चीजों की इच्छा करना महापाप है, जो मिला है उसमें ही संतुष्ट रहें।

ब्रह्मचर्य – तीर्थंकर महावीर के अनुसार जीवन में ब्रहमचर्य का पालन करना सबसे कठिन है, जो भी मनुष्य इसको अपने जीवन में स्थान देता है, वो मोक्ष प्राप्त करता है।

अपरिग्रह – ये दुनिया नश्वर है. चीजों के प्रति मोह ही आपके दु:खों को कारण है. सच्चे इंसान किसी भी सांसारिक चीज का मोह नहीं करते।

- कर्म किसी को भी नहीं छोड़ते, ऐसा समझकर बुरे कर्म से दूर रहो।

-तीर्थंकर स्वयं घर का त्याग कर साधू धर्म स्वीकारते हैं तो फिर बिना धर्म किए हमारा कल्याण कैसे हो?

-तीर्थंकर ने जब इतनी उग्र तपस्या की तो हमें भी शक्ति अनुसार तपस्या करनी चाहिए।

-तीर्थंकर ने सामने जाकर उपसर्ग सहे तो कम से कम हमें अपने सामने आए उपसर्गों को समता से सहन करना चाहिए।

वर्ष २०२६ में तीर्थंकर महावीर जन्म कल्याणक पर्व कब है?

वर्ष २०२६ में तीर्थंकर 'महावीर जन्म कल्याणक' ३१ मार्च को मनाया जाएगा, जहां भी जैनों के मंदिर है, वहां इस दिन विशेष आयोजन किए जाते हैं, परंतु महावीर जन्म कल्याणक अधिकतर त्योहारों से अलग,

तीर्थंकर महावीर के प्रमुख ग्यारह गणधर

श्री इंद्रभूती जी	श्री अग्निभूति जी
श्री वायुभूति जी	श्री व्यक्त स्वामीजी
श्री सुधर्मा स्वामीजी	श्री मंडितपुत्रजी
श्री मौर्यपुत्र जी	श्री अकम्पित जी
श्री अचलभ्राता जी	श्री मोतार्यजी
श्री प्रभासजी	

बहुत ही शांत माहौल में विशेष पूजा अर्चना द्वारा मनाया जाता है, इस दिन तीर्थंकर महावीर का विशेष अभिषेक किया जाता है तथा जैन बंधुओं द्वारा अपने मंदिरों में जाकर विशेष ध्यान और प्रार्थना की जाती है, इस दिन हर जैन मंदिर मे अपनी शक्ति अनुसार गरीबों में दान-दक्षिणा का विशेष महत्व है।

भारत में मुंबई, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान, बिहार, कोलकाता आदि-आदि शहरो व राज्यों में स्थापित प्रसिध्द मंदिरों में यह उत्सव विशेष रूप से मनाया जाता है। **-जिनागम**

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Saroj Bachawatt
Mob: 8981852225
Shree Siddhi Vinayak Garments
391/2, G.T. Road (N), Howrah, West Bengal, Bharat- 711106

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

ASHOK JAIN
Mob: 9821159793
VIJAY
HARDWARE MART PVT. LTD.
Exclusive Showroom for Furniture & Glass Architectural Fittings
Regd. Office:
Shop No. 5, Anand Apartment, Baptist Road, Vile Parle West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400056
Web: www.vhmpl.com Email : info@vhmpl.com / help@vhmpl.com
Contacts : +91 99201 70147 / +91 8828 68 98 10

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Vinod Bachhawat
Mob: 9331019325
Bengal Mono Fabrics
12, Portugese Church Street, 1st Floor, Kolkata, Bharat-700 001 Off: 033-22700487
भारत को 'भारत' ही बोला जाए गौ माता बनें 'राष्ट्रमाता'

प्रथम तीर्थकर भगवान ऋषभदेव का जन्म कल्याणक महामहोत्सव पुरे भारत में मनाएं

इंदौर: युग प्रवर्तक भगवान ऋाभदेव के जन्म कल्याणक पुरे देशभर में गूंजेगा षट्कर्मों का संदेश भारतवर्ष सृष्टि के आदि पुरुष, षटकर्मों के प्रणेता और प्रथम तीर्थकर भगवान श्री १००८ ऋऋऋभदेव (आदिनाथ भगवान) का पावन जन्म एवं तप कल्याणक महोत्सव इस वर्ष १२ मार्च, गुरुवार को पूरे देश में बड़े ही हर्ष हर्षोल्लास और भक्तिभाव के साथ मनाया जाएगा। धर्म समाज प्रचारक राजेश जैन दद्दू ने बताया कि इस अवसर पर जैन समाज द्वारा विभिन्न सार्वजनिक आयोजनों के माध्यम से भगवान सभदेव के जीवन दर्शन और उनके द्वारा दी गई जीवन जीने की कला को जन-जन तक पहुँचाने का संकल्प लिया गया है।

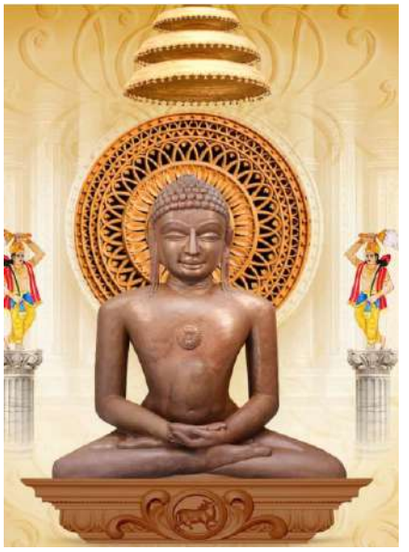

आदि पुरुष ने दी थी सभ्य समाज की आधारशिला- भगवान सभदेव ने ही इस कलिकाल में भटकती मानवता को सभ्य, सुरक्षित और समृद्ध जीवन जीने का मार्ग दिखाया था। उन्होंने ही समाज को असि (रक्षा), मसि (लेखन), कृषि (खेती), (व्यापार), शिल्प (कला) और विद्या (ज्ञान) जैसे षटकर्मों की शिक्षा दी। उन्होंने कवल मोक्षमार्ग का उपदेश दिया, न बल्कि संसार में स्वावलंबी जीवन जीने की नींव भी रखी।

सार्वजनिक स्थानों पर होंगे भव्य आयोजन- राष्ट्रीय जिन शासन एकता संघ एवं भगवान सभदेव जन्म कल्याणक महोत्सव समिति के मंयक जैन ने भारत वर्षीय सकल जैन समाज से अपील की है कि इस बार यह उत्सव केवल मंदिरों तक सीमित न रहकर जन-मानस के बीच मनाया जाए। महोत्सव के वाणिज्य तहत विभिन्न कार्यक्रमों की रूपरेखा तैयार की गई है-

धर्मसभा एवं संगोष्ठी- प्रमुख चौराहों और सार्वजनिक स्थलों पर भगवान ऋाभदेव के जीवन वृत्त पर परिचर्चा।

भक्तामर पाठ एवं महाआरती रिद्धि- सिद्धि मंत्रों के साथ सामूहिक दीप प्रज्वलन और भक्तामर पाठ। सर्वधर्म सद्भाव आयोजनों में जैनेत्तर (अजैन) विद्वानों और गणमान्य नागरिकों को विशेष रूप से आमंत्रित किया जाएगा ताकि भगवान सभदेव का वैश्विक संदेश जन जन तक पहुँच सके। भारत वर्षीय सकल जैन समाज का आह्वान एवं राष्ट्रीय जिन शासन एकता संघ के पदाधिकारियों ने बताया कि भगवान सभदेव केवल जैनों के ही नहीं, बल्कि संपूर्ण मानवता के मार्गदर्शक हैं। अतः इस पावन दिवस को प्रभावना पर्व के रूप में मनाते हुए समाज के हर वर्ग को इससे जो?? जाएगा।

We are your
3R implementation
partner

Reduce
Reduce Scope 3 emissions with certified Green Steel.
Cut emissions from reverse logistics

Recycle
Simplify management of major dry industrial waste across 8+ categories.

Reuse
Maximize reuse of high-value downstream materials
(30-40% reused)

MTC GROUP™
METTLE MAKES US

India's leader in sustainable metal solutions
- Metal recycling (Ferrous & Non ferrous)
- Ferro Alloys, base & minor metals
- Green Manufacturing (TMT re-bars, Structural Steel & Copper Tubes)
- Demolition and dismantling
- ELV, e-waste & plastic recycling
- Automobile retail

UK USA UAE SINGAPORE
www.mtcgroup.in

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर महावीर स्वामी के धर्म का इतिहास (कथानुसार)

अबोध नयासर ने साधुओं को उनकी ओर आते देखा और उनके आने पर गहरी भक्ति से उन्हें भोजन कराया, जब वे नगर की ओर रवाना होने लगे, नयासर भी कुछ दूर तक उनके साथ चलने लगे, जब नयासर नतमस्तक होकर उनसे विदा लेने के लिए झुके तो उन साधुओं ने उनको सच्चे मार्ग, करुणा, दया, सादगी, विनम्रता और धैर्य के सरल उपदेश दिए।

नयासर प्रबुद्ध हो गये और धर्म का बीज उनके मन में अंकुरित हो गया, उनके आध्यात्मिक विकास का ये पहला बिंदु था, जब उन्होंने भ्रम के अंधेरे से आध्यात्मिक प्रकाश की पहली झलक को देखा।

तीर्थंकर महावीर स्वामी की आत्मा के पहले अवतार की गिनती यहां से शुरू होती है।

तीर्थंकर महावीर स्वामी का तीसरा अवतार : मरिची नयासर की आत्मा ने सौधर्म कल्प के रूप में एक भगवान की तरह पुनर्जन्म लिया, इसके बाद उन्होंने तीसरा जन्म अयोध्या के चक्रवर्ती भरत के पुत्र मरीचि के रूप में लिया। भगवान ऋषभदेव का पहला प्रवचन सुनकर वो श्रमण बन गये लेकिन वो कठोर तपस्वी नियम नहीं अपना सकते थे, इसलिए उन्होंने श्रमण के वस्त्र त्याग दिए और श्रमण सिद्दांतों के कठोर नियमों में ऐच्छिक बदलाव कर त्रिदंडी परिवर्जक भिक्षुओं का एक वर्ग बनाया, इस तरह उन्होंने एक छाता और खड़ाऊं पहनकर रहना शुरू कर दिया, वो प्रतिदिन नहा धोकर चन्दन का लेप लगाते थे, हालांकि अभी भी वो तीर्थंकर ऋषभदेव का मार्ग सही मानते थे, तीर्थंकर ऋषभदेव के समवसरण में बैठ जाते और अपनी वेशभूषा के बारे में पूछने पर अपनी कमजोरी स्वीकार कर लेते और आस-पास के लोगों को श्रमण धर्म अपनाने के लिए प्रेरित करते।

एक दिन चक्रवर्ती भरत ने तीर्थंकर ऋषभदेव से पुछा 'प्रभु क्या आपकी तरह दिव्य आत्मा मौजूद है जो आपकी तरह तीर्थंकर बन सकती है' ऋषभदेव ने जवाब दिया।

'भरत ! इस धार्मिक मण्डली से बाहर परिवर्जक के वेश में तुम्हारा पुत्र बनेगा' कई वर्षों तक कठोर तपस्याओं के बाद वो इस चक्र का अंतिम तीर्थंकर बनेगा, उसके मरीचि से महावीर बनने के दौरान वो एक जन्म में त्रिपरिष्ठ वासुदेव और दुसरे में प्रियमित्र चक्रवर्ती भी बनेगा।

ऋषभदेव की ये बातें सुनकर अपने पुत्र मरीचि की आत्मा के उज्ज्वल भविष्य को जानकर स्तब्ध रह गए और खुशी मनाने लगे, इस सुचना को लेकर मरीचि के पास गये और कहा:

'मरीचि! तुम बहुत भाग्यशाली हो, मैं तुम्हें भविष्य के तीर्थंकर के रूप में अभिवादन करता हूँ।

मरीचि! भगवान ऋषभदेव की इस भविष्यवाणी को सुनकर बहुत खुश हुए, लेकिन उसी समय वो अपने वंश के वैभव के बारे में भी सोचने लगे, अपने वंश के लिये गौरवान्वित होते हुए कहा कि 'मेरा वंश कितना महान है, मेरे पितामह पहले तीर्थंकर हैं, मेरे पिताजी चक्रवर्ती हैं और मैं वासुदेव बनुंगा, इस चक्र के अंत में अंतिम तीर्थंकर बनूंगा, धीरे-धीरे वो आध्यात्मिक उत्कृष्टता की ऊचाइयों की ओर सरकने लगे और जातीय वर्चस्व की अहंकार में गोते खाने लगे।

जैन धर्म के अनुसार मरीचि परिवर्जक विद्यालयों के संस्थापक थे, मरीचि का कहना था कि श्रमण! मन, वाणी और शरीर की विकृतियों से मुक्त होते हैं लेकिन परिवर्जक के पास ये सब चीजें थी। परिवर्जकों ने त्रिशूल को अपना चिन्ह बनाकर अपने साथ रखने लगे, उनके जीवन के अंतिम दिनों में उन्होंने राजकुमार कपिल को अपना अनुयायी बनाया और कपिल ने उनके मार्ग पर चलते हुए परिवर्जक विद्यालय बनाये।

महावीर स्वामी का १६वां अवतार विश्वभूती: मरीचि की आत्मा मनुष्य जन्म से भगवान की तरफ चलायमान हुयी और फिर वैकल्पिक रूप से १२ अवतार बाद आयी, जब उन्होंने मनुष्य रूप में जन्म लिया तो कई बार परिवर्जक बने और कई तपस्यायें की, उनके १६वें अवतार में वो राजगृह के राजा विश्वनंदी के भतीजे राजकुमार विश्वभुती के रूप में जन्म लिया और तपस्वी बनकर अपनी अन्तिम सांस तक कठोर तपस्या करते रहे। १७वें अवतार में उन्होंने देवताओं का रूप महाशक्र के **शेष पृष्ठ २० पर...**

।। ॐ अर्हम् ।।

महावीर जिनका नाम है पावापुरी जिनका धाम है
अहिंसा जिनका नारा है ऐसे त्रिशला नंदन को
लाख प्रणाम हमारा है।
तीर्थंकर महावीर जन्मोत्सव पर हार्दिक शुभकामनाएं

Manoj Kumar Daga
Mobile : 9845062865
Qualityplus Star Krraft Corporation
#46, Manchanayakahalli, Grama Panchayath,
Beemanahalli, Village, Bidadi Hobli , Dist. Ramanagar,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 562109
Mob. : 8861135836
Res. : Flat #3A, Rajeshwari Homes Apts, 10th Cross, Ideal Homes Society, Rajarajeshwari Nagar,
Bengaluru, Karnataka, Bharat - 560098
Ph. : 080-28602078

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जीयो और जीने दो के विचारक

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर

हार्दिक शुभकामनाएं

परस्परोपग्रहो जीवानाम

परस्परोपग्रहो जीवानाम

मानकचंद राठौड़

Oswal Udhyog India Pvt Ltd

Dye, Pigments and Speciality Chemicals

C/211-213, Morya House, Off. New Link Road, Andheri West,
Mumbai - 400053, Maharashtra, Bharat
Phone :08037401898 | Fax :91-22-26744280

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ १८ से... रूप में जन्म लिया, १८वें अवतार में वो त्रिप्रिष्ट वासुदेव बने।

महावीर स्वामी का १८वां अवतार: पाटनपुर के राजा प्रजापति की पत्नी मृगवती ने एक अत्यंत शक्तिशाली पुत्र दिया, जिसका नाम त्रिपरिष्ठ था। प्रजापति एक अधीनस्थ राज्य प्रतिवासुदेव के साधारण राजा थे। त्रिपरिष्ठ बहुत बहादुर और शूरवीर युवक था, जब उसकी वीरता के किस्से अश्वग्रीव तक पहुंचा, वो भयभीत हो गया, उसने अपने ज्योतिष से पूछा कि किस तरह उसका विनाश करे, ज्योतिष ने कहा 'जो आदमी तुम्हारे शक्तिशाली राज्य चन्दनमेघ को कुचल सकता है और तुंग पर्वत पर क्रूर शेर को मार सकता है, वो तुम्हारे दिए मौत का दूत बनेगा! एक दिन अश्वग्रीव ने एक दूत को पाटनपुर भेजा और जब दूत ने बदसलूकी की तो त्रिपरिष्ठ ने उसे बाहर निकाल दिया, तब प्रजापति को एक सुचना मिली कि एक क्रूर शेर शाली प्रदेश पर कहर ढा रहा है, तुरंत उस स्थान पर जाकर उस शेर से किसानों को बचाओ, जब प्रजापति जाने के लिए तैयार हुए तब त्रिपरिष्ठ ने विनती की कि 'पिताजी मेरे होते हुए आपको परेशान होने की आवश्यकता नहीं है, आपका पुत्र उस नरभक्षी को आसानी से मार देगा।

त्रिपरिष्ठ और उसका ज्येष्ठ भाई बलदेव अचल कुमार जंगल में गये और स्थानीय लोगों से शेर के बारे में पूछा, उनके निर्देशानुसार वो उस शेर की तरफ बढ, लोगों की आवाज सुनकर शेर अपनी गुफा से बाहर आ गया और राजकुमार की तरफ बढ़ना शुरु किया, शेर को अपनी ओर आता देख त्रिपरिष्ठ ने सोचा 'शेर अकेला चल कर आ रहा है तो मुझे अंगरक्षक और रथ की क्या आवश्यकता है, उसके पास हथियार नही है तो मै क्यों हथियार लेकर जाऊं मैं उससे खाली हाथ और अकेला मुकाबला करूंगा' त्रिपरिष्ठ अपने रथ से उतर गया और अपने सभी अस्त्र फ़ेंक दिए, वो खाली हाथ और अकेला उस नरभक्षी से लड़ा और अंत में उसने शेर का जबड़ा फाड़ दिया, रथ का सारथी कराहते शेर के पास गया, उससे सहानभूति के कुछ शब्द कहे और उसके घावों पर औषधीयां जड़ी-बूटियाँ लगा दी। नरभक्षी के मौत के क्षण शांतिपूर्ण थे, उस मरते हुए शेर के दिमाग में उस सारथी के लिए स्नेह का भाव आया, उस सारथी ने महावीर स्वामी के मुख्य अनुयायी इंद्रभूति गौतम के रूप में पुनर्जन्म लिया और उस शेर ने एक किसान के रूप में जन्म लिया, जब उस किसान ने गौतम को देखा तो गौतम के लिए बन्धुत्व और सम्मान की भावना का संचार हुआ और वो किसान गौतम का अनुयायी बन गया, लेकिन जब उसने महावीर स्वामी को देखा तो उसके मन में डर और प्रतिशोध की भावना आयी, महावीर स्वामी ने तब उसकी सुषुप्त भावनाओं के कारण को बताने के लिए उसके पहले के जीवन की कहानी सुनाई।

राजकुमार त्रिपरिष्ठ ने अश्वग्रीव पर आक्रमण कर दिया और तीन महाद्वीपों पर अपना साम्राज्य बना लिया, इसके बाद वो अपने चक्र के प्रथम वासुदेव बने, एक दिन वासुदेव अपनी सभा में संगीत सभा का आनन्द ले रहे थे, जब नींद के कारण उनकी पलकें भारी होने लगी तो उन्होंने अपना बिस्तर तैयार करने का आदेश दिया और कहा 'जब मैं सो जाऊं तो ये कार्यक्रम समाप्त कर देना, कुछ क्षणों बाद त्रिपरिष्ठ ने अपनी आँखें बंद कर ली और उन्हें नींद आ गयी, अब वहां उपस्थित सभी दरबारी वापस संगीत में तल्लीन हो गये। वो कार्यक्रम पुरी रात चला, अचानक वासुदेव जाग गये और उन्होंने संगीत की आवाज सुनी तो वो गुस्से से लाल हो गये और वहां उपस्थित सभी लोगों पर चिल्लाये 'संगीत अभी तक रुका क्यों नहीं, बिस्तर लगाने वाले ने हाथ जोड़ कर कहा 'सभी संगीत के मधुर स्वरों में खो गये थे, मैं भी संगीत में खो गया था, उसके आदेश की अवमानना करने से क्रोधित होकर उन्होंने अपना सारा क्रोध उस लापरवाह बिस्तर लगाने वाले पर निकाला और कहा 'पिघले हुए सीसे की छड़ों को इस संगीत के शौकीन के कानों में डाल दो, उसे ये एहसास होना चाहिये कि मालिक **शेष पृष्ठ २१ पर...**

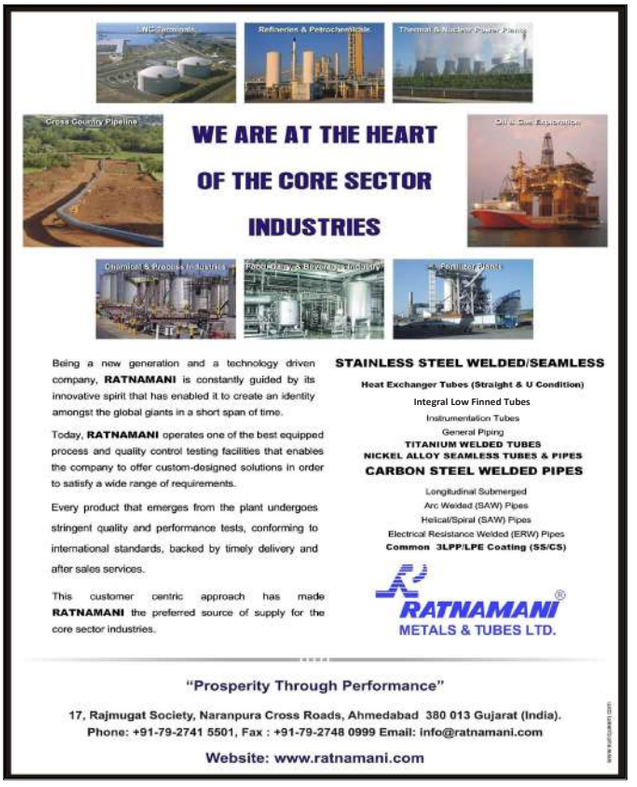

पृष्ठ २० से ... की अवमानना करने का क्या अंजाम होता है, वासुदेव के आदेश की पालना हुयी और असहनीय पीड़ा से उस बिस्तर लगाने वाले की मौके पर ही मौत हो गयी।

त्रिपरिष्ठ के रूप में उनके क्रूर स्वभाव के कारण उनकी आत्मा ने कलंकित कर्मों का बंधन संचित किया, उनके इसी क्रूर स्वभाव के कारण महावीर के रूप में उनको कष्टदायी परिणाम भुगतने पड़े, महावीर अवतार में इसी बिस्तर परिचर ने किसान का रूप लिया और श्रमण के रूप में तपस्या करते समय इनके कानों में कीलें ठोकी थी, सत्ता के नशे, भव्यता के लिए जुनून और क्रूर बर्ताव के कारण त्रिपरिष्ठ वासुदेव ने अपना जीवन जीने के बाद अगले जन्म में सातवें नर्क में जन्म लिया, उनके २१वें अवतार में वो शेर बने, २२वें अवतार में फिर चौथे नर्क में गये और उसके बाद २३वें अवतार में उन्होंने प्रियमित्र चक्रवर्ती के रूप में जन्म लिया।

महावीर स्वामी का २३वां अवतार: प्रियमित्र चक्रवर्ती कई शुभ स्वप्न देखने के बाद मुकनगरी के राजा धनंजय की पत्नी ने एक पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम प्रियमित्र था, उनके धार्मिक कर्मों और बहादुरी की वजह से उन्होंने सातों महाद्वीप पर कब्ज़ा कर लिया और चक्रवर्ती बन गये। चक्रवर्ती बनने के बाद वो बहुत सुख और वैभव से रहे, अंत समय में अलगाव हो गया और पोत्तिलाचार्य से दीक्षा लेकर श्रमण बन गये। कई वर्ष तक कठोर तपस्या से अपने पिछले जन्मों का ज्ञान हुआ, अपना जीवन पूरा कर वो महाशुक्र कल्प के रूप में पुनर्जन्म लिया और इसके बाद अगले अवतार में वो चात्रंगेरी के राजा जीतशत्रु के पुत्र के रूप में जन्म लिया।

महावीर स्वामी का २४वां अवतार : नन्दन मुनि जीत शत्रु के पुत्र का नाम राजकुमार नंदन था, जो सांसारिक भोग और वासना में लिप्त संसार में एक कमल के फूल की तरह था, उसके आध्यात्मिक खोज की भावना को सुन्दरता का आकर्षण मोड़ नहीं पायी, अंत में वो पोट्टीलाचार्य के अनुयायी बने, तपस्वी बनकर उसने तपस्या की अग्नि से अपनी आत्मा को शुद्ध किया, उसने तपस्या के २० कदमों का कठोर पालन किया, जिसके फलस्वरूप उन्होंने तीर्थंकर नाम और गोत्र कर्म अर्जित किया ताकि अगले जन्म में तीर्थंकर बनें, इसके बाद उन्होंने प्रनत पुस्पोत्तर विमान के रूप में जन्म लिया, तत्पश्चात महावीर रूप में जन्म लिया।

तीर्थंकर महावीर स्वामी का २४वां अवतार : नन्दन मुनि जीत शत्रु के पुत्र का नाम राजकुमार नंदन था जो सांसारिक भोग और वासना में लिप्त संसार में एक कमल के फूल की तरह था, उसके आध्यात्मिक खोज की भावना को सुन्दरता का आकर्षण मोड़ नहीं पायी। अंत में वो पोट्टीलाचार्य के अनुयायी बने। तपस्वी बनकर उसने तपस्या की अग्नि से अपनी आत्मा को शुद्ध किया, उसने तपस्या के २० कदमों का कठोर पालन किया, जिसके फलस्वरूप उन्होंने तीर्थंकर नाम और गोत्र कर्म अर्जित किया ताकि अगले जन्म में वो तीर्थंकर बने, इसके बाद उन्होंने प्रनत पुस्पोत्तर विमान के रूप में जन्म लिया, तत्पश्चात महावीर के रूप में जन्म लिया।

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

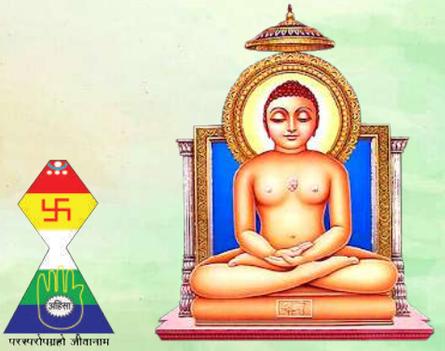

परस्परोपग्रहो जीवानाम
परस्परोपग्रहो जीवानाम

BINOD KUMAR GANG
Mob: 9435 074716
Nathmal Hemraj / Gang Brothers
Madan Mohan Road, Karimganj,
Assam, Bharat - 788711
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

मुनिपुंगव श्री सुधा सागर बालिका छात्रावास
पुण्योदय अतिशय तीर्थक्षेत्र नसियां जी दादाबाड़ी, कोटा (राजस्थान)
-: प्रवेश प्रारम्भः-
वातानुकूलित (AC) रूम, अटैच लेटबाथ, सिंगल एवं डबल रूम, कोचिंग तक आने जाने की सुविधा, 24 घन्टे महिला सुरक्षा गार्ड, पूर्ण सुरक्षित परिसर शुद्ध सात्विक भोजन। 24 घंटे 3 जैन महिला वार्डन, मन्दिर परिसर में स्थित गिर गाय गौशाला का शुद्ध दुध दोनो वक्त, लाइब्रेरी कक्ष, वाकिंग ट्रेक, माता, पिता के रूकने के लिए डोरमेट्री, आर्युवेदिक औषधालय, एलोपैथिक डॉ., होम्योपैथिक डॉ., नेत्र डॉ., ब्लडसेम्पल जॉच लेबोरेट्री सभी की रोज प्रातः 8-10 की सुविधा परिसर में ही उपलब्ध। परिसर में पार्क सुविधा उपलब्ध
शुद्ध सात्विक भोजन, प्रातः में नाश्ता, दूध, संडे को स्पेशल कपड़ों की ड्राई क्लीन हॉस्टल में ही पीसे शुद्ध मसाले, आटा, बेसन हॉस्टल में ही बनी हुई मिठाई, नमकीन, अचार, छाछ एवं फल वातानुकूलित भोजनशाला में उपलब्ध पूर्ण सुरक्षित परिसर मे स्थित सात्विक भोजन IIT-JEE, NEET, SCHOOL, RPSC, UPSC, CA, Teaching Banking अन्य Govt. Job की तैयारी हेतु सिंगल महिलाव बालिकाओ हेतु सिंगल एवं डबल AC रुम उपलब्ध है। Laundry/Ro Water / CCTV कैमरा की 24 घंटे सेवा उपलब्ध है
सम्पर्कः- 9829038906, 9799521154, 6376531154, 8690849107
अध्यक्ष व शिरोमणी संरक्षक श्रीमती अर्चना जैन (रानी) दुगेरिया सर्राफ
परम संरक्षक डॉ. संतोष जैन
निर्देशक श्रीमती उषा जैन बाकलीवाल
सचिव श्रीमती निशा जैन वेद
कोषाध्यक्ष श्रीमती छाया जैन हरसोरा
एवं समस्त छात्रावास परिवार

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर महावीर के युग में भी गणतंत्र था

स्वयं महावीर गणतंत्र की राजधानी वैशाली के राजकुमार थे और दीक्षा के पश्चात् अरहन्त अवस्था को प्राप्त होते ही उन्होंने चतुर्विध संघ की स्थापना की, उनका अध्यात्म अनुशासन भी गणतंत्र पर आधारित था, महावीर ने कहा था जनतंत्र के तीन सूत्र हैं - स्वतंत्रता, समता और सह अस्तित्व।

जनतंत्र और महावीर

राजनीति विशारदों का मत है कि सबसे श्रेष्ठ शासन पद्धति वह है, जो जनता द्वारा स्वयं निर्मित हो, नियंत्रित हो, जनता के लिए हो तथा जनता का हो, जिसे जनतंत्र कहते हैं। भारत गणराज्य जनतंत्रात्मक है, विश्व के अधिकांश देशों की शासन पद्धति जनतंत्र पर आधारित है। बीसवीं शताब्दी की यह सबसे बड़ी उपलब्धि मानी जाती है, इस उपस्थिति में महावीर दर्शन का योगदान अभूतपूर्व, असाधारण एवं श्रेष्ठतम है। तीर्थंकर महावीर के युग में भी गणतंत्र था, स्वयं महावीर गणतंत्र की राजधानी वैशाली के राजकुमार थे और दीक्षा के पश्चात् अरहन्त अवस्था को प्राप्त होते ही उन्होंने चतुर्विध संघ की स्थापना की, उनका अध्यात्म अनुशासन भी गणतंत्र पर आधारित था। महावीर ने कहा- जनतंत्र के तीन सूत्र हैं - स्वतंत्रता, समता और सह अस्तित्व।

जनतंत्र का प्रथम सूत्र है स्वतंत्रता-

महावीर धर्म का शाश्वत और ध्रुव तत्व इसी को मानते थे कि किसी प्राणी का हनन, शोषण, पीड़न और दासत्व न हो, न कोई हीन है और न ही कोई उच्च है, अत: महावीर की मान्यता थी कि हर आत्मा मूलत: परमात्मा का स्वरूप है, वह स्वयं अपना भाग्य विधाता है, वही अपना मित्र है और वही अपना शत्रु है। स्वतंत्रता का अर्थ स्वच्छन्दता एवं तन्त्र हीनता नहीं है, स्वतंत्र का अर्थ है तंत्र दूसरे द्वारा आरोपित नहीं, बल्कि अपने द्वारा निर्मित एवं स्वीकृत हो, स्वतंत्र अर्थात् अपना तंत्र, आत्म संयम। संयम का अभाव स्वतंत्रता नहीं, तंत्र हीनता है, स्वच्छन्दता है, जिसका प्रजातंत्र में कोई स्थान नहीं है।

शेष पृष्ठ २३ पर...

अहंकार महाअग्नि है, जीवों को
कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व
पर हार्दिक शुभकामनाएं

Rajesh Doshi
Mob: 9324242388

ANJALI®
Since 1974

पावन दिन है आ गया, महावीर जन्म कल्याणक पर्व,
जैन एकता का वर माँग लो, फैले हमारा अहिंसा धर्म
जन्म कल्याणक उत्सव पर
हार्दिक शुभकामनाएं

ARHAM POLYCHEM PVT. LTD.

2, Raja Woodmount Street, 3rd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700001
Tel. : 033-22434400
Email : arham.kka@gmail.com

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ २२ से... स्वच्छन्दता दूसरों के हितों का अतिक्रमण कर सकती है, उससे शोषण तथा विषमताओं की वृद्धि होती है, जो प्रजातंत्र का विलोम है। संयम ही स्वतंत्रता है - यह महावीर का सूत्र वर्तमान भारतीय प्रजातंत्र के लिए एक महत्वपूर्ण दिशा दर्शक तत्व है।

संयम, नैतिक स्वतंत्रता है - जिसके अभाव में राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता का कोई मूल्य नहीं होता।

प्रजातंत्र का दूसरा सूत्र समता है-

महावीर ने समता को ही धर्म कहा है, यह समता सुख-दु:ख के प्रति समभाव है तथा प्राणी-मात्र के प्रति समत्व दृष्टि है, समता मानवीय अधिकारों का संरक्षक है और सामाजिक एवं आर्थिक विषमताओं को भी स्वयं समाप्त कर देता है।

प्रजातंत्र का तीसरा सूत्र है सहअस्तित्व-

सहअस्तित्व का अर्थ है हर व्यक्ति दूसरे के जीवन तथा अधिकार का आदर करे, उसका अतिक्रमण न करे। महावीर सह-अस्तित्व के सूत्र को विचारों को, चिन्तन की अतल गहराई तक ले गये। वैचारिक क्षेत्र में किसी पर जबरदस्ती अपना विचार थोपना गलत है। महावीर ने कहा - मैं उपदेश दे रहा हूँ, आदेश नहीं, तुम इसे अपनी प्रज्ञा की कसौटी पर कस कर देखो, खरा उतरता हो तो मानो, अत: दूसरे को गलत और अपने को ही एक मात्र सही नहीं मानना चाहिए, अपने विचार से हम सही हो सकते हैं, तो दूसरा भी अपनी दृष्टि से सही हो सकता है।

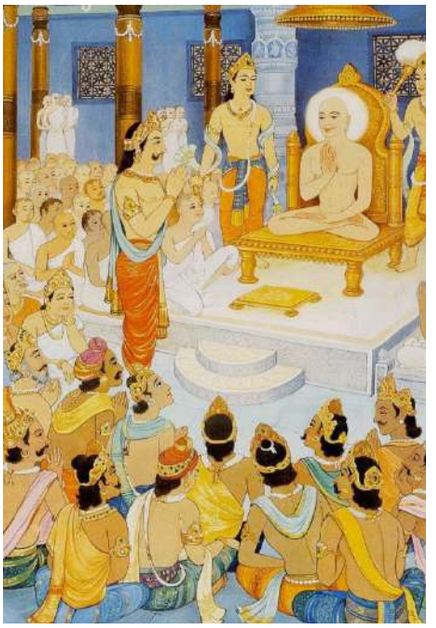

अत: विचारों को लेकर किसी के प्रति असहिष्णु नहीं होना चाहिए, किसी के आत्मनिर्णय के अधिकार का अतिक्रमण नहीं करना चाहिए।

महावीर का अनेकान्त दर्शन ही प्रजातंत्र का प्राण सूत्र है। 'संयुक्त राष्ट्र' संघ की स्थापना का मूल हेतु आत्म निर्णय की भावना थी, जो महावीर की दृष्टि से ही समाप्त किया जा सकता है। आज देश में भाषा, प्रान्त, सम्प्रदाय, मत, पंथ, नाम आदि को लेकर जो विघटन की प्रवृत्तियां चल रही हैं, वे अनेकान्त की प्रतिष्ठा से स्वत: निर्मूल हो सकती है, इस प्रकार हम जनतंत्र के मूल आदर्शों की सरल एवं व्यापक आधार भूमि महावीर के चिन्तन में पाते हैं, जनतंत्र का मूल आदर्श है अहिंसा, जो श्रमण-संस्कृति का, जैन-धर्म का केन्द्र बिन्दु है।

अहिंसा की ही निष्पत्ति अनेकान्त, समता और स्वतंत्रता है, इस अहिंसा को लोक जीवन में व्यापक प्रतिष्ठा होने से ही भारतीय जनतंत्र 'सर्वतोभावेन निष्कलुष' सफल हो सकेगा।

-जिनागम

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें
राजमल चंगेडिया जैन - सौ. मंगला चंगेडिया जैन
आदेशकुमार चंगेडिया जैन - सौ. प्रियंका चंगेडिया जैन
संभव चंगेडिया जैन व चंगेडिया परिवार
रूपाली गुगळे व शरण्या गुगळे
सौ. दिपाली मुनोत व तनय, दिव्या मुनोत
श्री राजमल श्रीमल
जनरल मर्चेन्ट ॲण्ड कमिशन एजेन्ट
56, मार्केटयार्ड, अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-414001
भ्रमणध्वनि : 09850995099 / 9373154586
प्रोप्रा. राजमल श्रीमल चंगेडिया जैन
चंगेडिया आऊट डोअर्स
अहमदनगर, महाराष्ट्र, भारत-414001 फोन : 0241-2547070
आदेश चंगेडिया - भ्रमणध्वनि 09822288443, 09011155555

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Rajendra Gangwal
9322287070
Renu jain Gangwal
8369778878
R.K.INTERNATIONAL
Manufacturer's, Representative
& Project Co-ordinators
A-201, Madhu Milan, Opp. Devki Nagar, Eksar Rd.,
Borivali West, Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400103.
Tel.: 022-28950278
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव

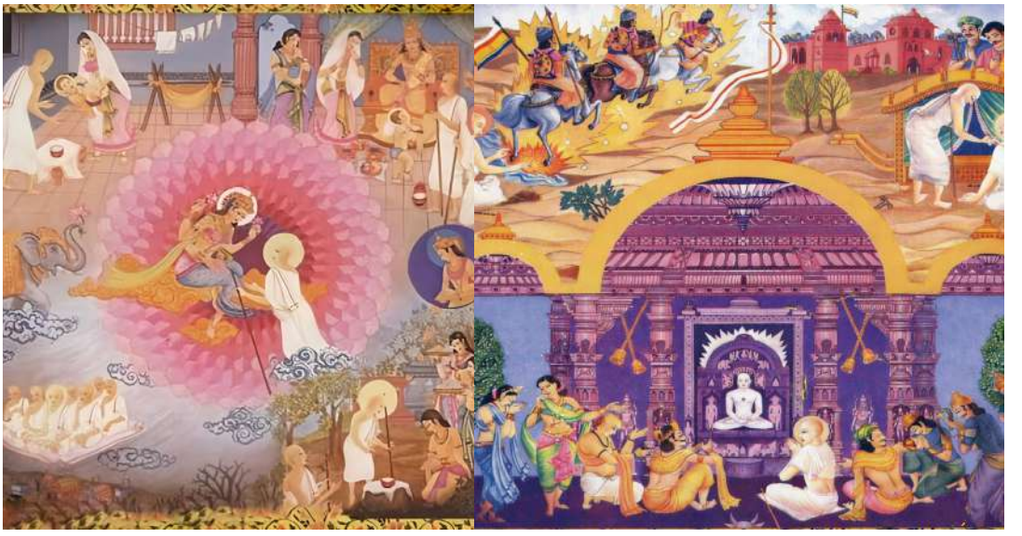

वैसे तो संसार का प्रत्येक प्राणी अनादि काल से जन्म-मरण भोगता आ रहा है लेकिन सार्थक वही जन्म होता है जिसमें जीव ने संसार परित्त (सीमीत) किया, उसी क्रम में प्रभु ऋषभ का जीव भी कई भव पूर्व जम्बूद्वीप के पश्चिम विदेह की क्षिति प्रतिष्ठित नगरी के प्रसन्नचन्द्र राजा के राज्य में धन्ना सार्थवाह था, एक बार व्यापार के लिए बसंतपुर जाने का निश्चय करके धन्ना ने राजाज्ञा पूर्वक नगर में घोषणा कराई कि यदि उनके साथ कोई चलना चाहे तो यथायोग्य पूर्ण सहयोग दिया जायेगा, इस घोषणा की जानकारी तंत्र विराजित आचार्य धर्मघोष को भी मिली। बंसतपुर की ओर विहार करने का निर्णय करके सार्थवाह से आज्ञा लेकर साथ में विहार कर दिया। रास्ते में वर्षाकाल से मार्ग अवरूद्ध हो जाने से सुरक्षित स्थान देखकर सार्थवाह को वहीं रूकने का आदेश दिया। धन्ना सार्थवाह के मुनीम मणिभ्रद ने आचार्य धर्मघोष व उनके शिष्यों को भी अपने झोपड़े में ठहरने की व्यवस्था कर दी, लेकिन

वर्षा का क्रम इतना लंबा हो गया, जिससे साथ की सारी खाद्य सामग्री समाप्त हो गई। लोग कंद मूल खाकर समय निकालने लगे। धन्ना सार्थवाह को जब इस स्थिति का पता चला तो वह विचार में पड़ गया कि ऐसी स्थिति में मुनिराजों को आहार कैसे प्राप्त हो रहा होगा, चिंतातुर स्थिति में वह सीधा चलकर मुनियों के पास आया और पश्चाताप करता हुआ आहार ग्रहण करने के लिए प्रार्थना करने लगा। सार्थवाह को पश्चाताप करते देख आचार्य श्री के निर्देशानुसार एक शिष्य भिक्षाटन करते हुए उसके आवास पहुँच गया, अपने आवास में मुनिराज को आते देख हर्ष विभोर होते हुए साधुओं के योग्य आहार खोजने लगा, लेकिन अन्य सामग्री को अप्रासुक देख चिंतित होते हुए उसकी दृष्टि पास में पड़े (प्रासुक) घी के घड़े पर पड़ी और बड़े प्रमुदित भाव से मुनिराज को ग्रहण करने का आग्रह करने लगा। मुनिराज ने झोली में से पात्र निकाला। सार्थवाह उत्कृष्ट भाव से पात्र में घी बहराने लगा, उसी समय एक देव ने उसकी उत्कृष्ट भावों की परीक्षा हेतु मुनिराज की दृष्टि बांध ली। मुनिराज का पात्र घी से भर गया, जब घी बाहर बहने लगा, फिर भी मना नहीं कर सके। सार्थवाह उत्कृष्ट भाव से बहराता ही रहा, जिसके फलस्वरूप उन्हीं उत्कृष्ट परिणामों से उसने सम्यक्त्व की प्राप्ति की, वहां की आयु पूर्ण कर तीसरे भव में सौधर्म कल्प में देव बना। आयु पूर्णकर चौथे भव में महाविदेह की गन्धिलावती विजय के गन्धार देश की गंध समृद्धि नगरी के शतबल नामक विद्याधर राजा की चन्द्रकांता रानी की कुक्षि से पुत्र रूप में पैदा हुआ, जिसका नाम 'महाबल' रखा गया। यौवनास्था में उसका विवाह सम्पन्न कर राजा शतबल ने महाबल का राज्याभिषेक कर दीक्षा ग्रहण कर ली।

महाबल राजा अपने एक बाल साथी व चार प्रधानों के साथ नर्तकी द्वारा किये जा रहे नृत्य में आसक्त हो रहे थे, इधर स्वयंबुद्ध नामक मंत्री, जिसे यह ज्ञात हो चुका था कि जंघाचरण मुनि द्वारा महाबल **शेष पृष्ठ २५ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

पृष्ठ २४ से... की सिर्फ एक माह की उम्र शेष है, ने राजा के समक्ष यह बात निवेदित कर दी, इससे प्रतिबोधित होकर राजा महाबल उत्कृष्ट भाव से संयम ग्रहण करके २२ दिन के अनशन पूर्वक देह त्याग कर ५ वें भव में दुसरे देवलोक में श्रीप्रभ विमान के स्वामी ललितांग देव बने, इनकी प्रधान देवी स्वयंप्रभा थी। ज्ञानी महापुरूषों से मुनि महाबल के देवयोनि में जन्मादि विषयक रहस्य जानकर स्वयं बुद्ध मंत्री ने भी सिद्धाचार्य के पास दीक्षा ग्रहण कर ली। उत्कृष्ट आराधना के साथ आयु पूर्ण कर मुनि स्वयं बुद्ध ईशानकल्प में देव बना, इधर ललितांग देव व स्वयं प्रभादेवी वहां की आयु पुर्ण करके महाविदेह क्षेत्र की पुष्पकलावती विजय में लोहार्दगल नगर के राजा स्वर्ण जंग की महारानी लक्ष्मी की कुक्षि से वज्रजंग नाम के पुत्र व श्रीमती नामक पुत्री के रूप में उत्पन्न हुये। यौवनावस्था में श्रीमती ने एक देव विमान को देखा, उसे देखकर जातिस्मरण ज्ञान के माध्यम से वह अपने पूर्वभव के पति का स्मरण करने लगी। पूर्वभव के पति की गहरी स्मृतियों के फलस्वरूप उसने यह प्रतिज्ञा धारण कर ली कि जब तक वे उसे नहीं मिलेंगे तब तक वह किसी से नहीं बोलेगी, यह बात उसकी पंडिता नामक दासी ने जान ली। श्रीमती की सहायता करने हेतु दासी ने इशान कल्प के ललितांग देव के विमान का कुछ त्रुटिपूर्ण चित्र बनाकर राजपथ पर टांग दिया, जिसे देखते ही वज्रजंग को भी जातिस्मरण ज्ञान हो गया और उसने उस चित्र में रही त्रुटि को दूर कर दिया, यह बात उनके पिता सवर्ण जंग को मालूम हुई तब उन्होंने दोनों की शादी कर दी, कुछ समय पश्चात् श्रीमती ने एक पुत्र को जन्म दिया, धीरे-धीरे पुत्र युवावस्था को प्राप्त होने लगा, उसको युवा होते देख रात्रि को दोनों ने उसको राज्य सौंप कर दीक्षा ग्रहण करने का विचार किया, उधर उसी रात्रि को पुत्र ने राज्य लोभ में विषाक्त धुँआ उनके महल में छोड़ दिया, फलत: दोनों ने शुभ परिणामों से अपनी आयु पूर्ण कर ७ वें भव में ३ पल्योपम की स्थिति वाले कुरूक्षेत्र के युगलिक रूप से जन्म लिया, वहां की आयु पूर्ण करके दोनों ८ वें भव में सौधर्म देवलोक में देव बने, ९ वें भव में वज्रजंग का जीव जंबूद्वीप के महाविदेह में क्षिति प्रतिष्ठित नगर के सुविधि वैद्य के यहां जीवानंद नामक पुत्र रूप में जन्म लिया और श्रीमती का जीव इसी नगर में श्रेष्ठि ईश्वरदत्त के पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ, जिसका नाम राव रखा गया, इसी काल में राजा ईशानचंद की रानी कनकवती के भी एक पुत्र हुआ, जिसका नाम महीधर रखा गया।

राजा के मंत्री सुवासीर की पत्नी लक्ष्मी के सुबुद्धि नाम का पुत्र हुआ। सागरदत्त सार्थवाह की पत्नी अभागी के पुर्णचंद्र व धनश्रेष्ठि की पत्नी शीलवती के गुणकर पुत्र हुआ, पूर्वभव की प्रीति से सबमें परस्पर मित्रता हो गई। यौवनवय में जीवानंद प्रसिद्ध वैद्य बन गया।

एक दिन सभी मित्रों ने जंगल में घूमते हुए एक मुनि को ध्यानस्थ देखा। मुनि का शरीर भयंकर व्याधि से ग्रस्त था, इसे देखकर परस्पर उपचार का चिंतन करने लगे। वैद्य जीवानंद बोला-"भैया इनके उपचार हेतु अन्य औषध तो मेरे पास है पर रत्न कंबल और गोशीर्ष चंदन की आवश्यकता है। पांचों मित्रों ने बाजार में खोज की तो एक श्रेष्ठी के यहां दोनों वस्तुएँ मिल गई। मुनिराज के उपचार की बात सुनकर सेठ ने दोनों चीजें बिना मूल्य लिये ही दे दी और खुद भी सेवा में जुट गया। उपचार करने पर मुनि पूर्णत: नीरोगी हो गये, तत्पश्चात् मुनि के उपदेश से प्रभावित होकर सभी मित्रों ने उनसे संयम ग्रहण कर लिया और वे सब अनशनपूर्वक आयु पूर्ण कर दसवें भव में अच्युतकल्प के इन्द्र के सामानिक देव हुए, वहां से जीवानंद का जीव ११वें भव में जंबू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र में पुण्डरीकिणी नगरी के वज्रसेन राजा की धारिणी रानी के गर्भ से १४ स्वप्न के साथ पुत्र रूप में उत्पन्न हुआ, जिसका नाम वज्रनाभ रखा गया, शेष पांचों ने उनके लघुभ्राता रूप में जन्म लिया।

वज्रनाभ के युवा होने पर वज्रसेन राजा ने उसका राज्याभिषेक कर स्वयं ने दीक्षा ग्रहण की और केवलज्ञान प्राप्त किया। वज्रनाभ सम्राट बना। छोटे भाई बाहु, सुबाहु, पीठ और महापीठ नामक मांडलिक राजा बनें। सुयश चक्रवर्ती का सारथी बना। पिता वज्रसेन के उपदेश से प्रतिबोधित हो छहों ने संयम ग्रहण किया। वज्रनाथ ने 'बीस बोला' की आराधना से तीर्थंकर गोत्र का उपार्जन किया और अपने साथियों के साथ आयु पूर्णकर सर्वार्थ सिद्ध नामक विमान में देव बनें। विगत चौबीसी के अंतिम तीर्थंकर संप्रति के निर्वाण होने के बाद १८ कोड़ाकोड़ी सागरोपम के बीतने पर भरत क्षेत्र में तीसरे आरे के ८४ लाख पूर्व ३ वर्ष साढ़े आठ महीने शेष रहने पर, सर्वार्थ सिद्ध विमान का आयु पूर्ण कर आषाढ़ कृष्ण चतुर्दशी को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से चंद्र का योग होते ही प्रभु ऋषभदेव का जीव वहां से चलकर नाभि कुलकर की पत्नी मरूदेवी के गर्भ में आया, माता मरूदेवी ने हाथी वृषभादि १४ दिव्य स्वप्न देखे। गर्भ में आने के ठीक नौ महीने साढ़े सात रात्रि व्यतीत होने पर चैत्र कृष्णा अष्टमी की रात्रि को उत्तराषाढ़ा नक्षत्र से चंद्रमा का योग होने पर प्रभू ने युगलरूप से जन्म लिया। ५६ दिक्कुमारियों व शक्रेन्द्र आदि ६४ इन्द्रों ने जन्मोत्सव मनाया, यथासमय इनका नाम ऋषभ रखा गया। इन्द्र द्वारा प्रदत्त 'इक्षु' चूसने से इक्ष्वाकु कुल प्रचलित हुआ, अन्य युगलिकों द्वारा 'काश' का रस ग्रहण करने से काश्यप गोत्र चल पड़ा, जो आज भी जारी है।

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

DIGAMBER
FABRICS
Sanjay Jain ■ Saurabh Jain
9829013109 ■ 9929011109

PHOOL BOOTI PVT. LTD.

● Kurtis ● Salwar Suits ●
● Fabrics Work ●
● Printed Running Fabrics ●

● Address ●
C-43/44, Industrial Estate,
Near SBI Bank, Bias Godown,
South Jaipur, Rajasthan, Bharat -302006
Website: phoolbooti.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

सारा जमाना पदम जैन का दीवाना

हजारों परिवारों को रिश्तों में जोड़ने वाले पदमचंद जैन का हर कोई दीवाना

वैवाहिक दुनिया के बेताज बादशाह के रूप में सुप्रतिष्ठित पदमचंद जैन की आज दुनिया दीवानी है। दुनिया जिन उद्योगपतियों, फिल्मी सितारों की दीवानी है, वे सारे पदमचंद जैन के दीवाने है। और हो भी क्यों नहीं? आखिर देशभर में अब तक नामी-गिरामी परिवारों को आपस में वैवाहिक रिश्तों में जोड़ने का कीर्तिमान जो स्थापित किया है। जयपुर में एक शादी के आयोजन में जीतो के श्रेष्ठीवर्य से मुलाकात हुई। इनमें तारक मेहता का उल्टा चश्मा के फेम शैलेष लोढा, शेयर मार्केट के दिग्गज मोतीलाल ओसवाल, प्रमुख बिल्डर सुभाष रूणवाल, सेलो ग्रुप के प्रदीप राठौड, इन्स्पीरा के प्रकाश जैन, डॉ. सुरेन्द्र जैन युएसए, प्रकाश कानुगो, तेजराज गुलेच्छा, किशोर खाबिया, राकेश मेहता, शांतिलाल कवाड़, संदिप बाफना सहित अनेक दिग्गजों से मुलाकात हुई। पदमचंद जैन ने अपनी चिर परिचित शैली में सभी का आत्मीय स्वागत किया। रूणवाल परिवार में वैवाहिक आयोजन के अवसर पर परिवार को बधाई दी। पूरे भारत में ओसवाल जैन बच्चों के वैवाहिक बायोडेटा के लिए पदमचंद जैन एक जाना-माना नाम है। राजनीति, प्रशासनिक, समाजसेवी, ब्यूरोक्रेटस उद्योगपति, सहित हर क्लास परिवार के बच्चों के बायोडेटा उपलब्ध है। सच में इतनी दीवानगी देखी नहीं कहीं। हर जुबां पर पदमचंद जैन का नाम।

■ आपके सपनों को पूरा करने वाली टीम ■

आईजेवीओ यानी पदम परिवार की यह टीम आपके बच्चों के लिए तलाशती हैं एक-से-बढ़कर एक सुंदर रिश्तों वाला बायोडाटा

॥ श्री पार्श्वनाथाय नमः ॥

रिश्तों का मंडप आई जे वी ओ

विश्वस्तरीय ओसवाल-दिगम्बर जैन एवं वैश्य समुदाय के 8 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्ते करवाने का गौरवशाली कीर्तिमान स्थापित

9314510196 / 9602623456

प्रोफेशनल, सीए, पायलट इंजीनियर, आईएएस, आईपीएस, आरएएस, फिल्म, राजनैतिक क्षेत्र के अलावा हर वर्ग और क्षेत्र में कार्यरत युवा-युवतियों के लिए जांचे परखे वैवाहिक रिश्तों का खजाना

1 जून से 2000 से सतत आपकी सेवा में तत्पर

IJ VO **जैन - वैश्य वैवाहिक रिश्तों का आखिरी पड़ाव**

एक छत के नीचे उपलब्ध सेवाएं

वैवाहिक-रोजगार, छात्रवृत्ति, विधवा पेंशन, मेडिकल हेल्प, प्रशासनिक एवं कानूनी सलाह, धार्मिक एवं सामाजिक क्षेत्र में सदैव अग्रणी सहयोगी

इंटरनेशनल जैन एवं वैश्य ऑर्गनाइजेशन

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04

फोन : 0141-2602626

अपनों से हो अपनों का रिश्ता

इस केन्द्र की स्थापना से लेकर अब तक लगभग 50 हजार से अधिक वैवाहिक रिश्तों के बायोडेटा आ चुके हैं और निरंतर वृद्धि हो रही है। इस केन्द्र के कम्प्यूटर पीड बायोडेटा में बड़ी आसानी से मनवांछित रिश्ते के लिए बायोडेटा पलक झपकते ही उपलब्ध हो जाते हैं। देश में आज इतना बड़ा नेटवर्क कहीं देखने को नहीं मिलता जहां सभी बायोडेटा वेरीफाईड हो अर्थात प्रत्येक बायोडेटा की पूर्ण सुरक्षता से जांच की जाती है, उसके बाद ही बायोडेटा प्रोसेस में अग्रेषित होते हैं। इस केन्द्र में देश-विदेश के जैन-वैश्य समुदाय के हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के वैवाहिक बायोडेटा उपलब्ध हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा हो, सी.ए. हो, आई पीएस हो या राजनीति, समाजसेवा के क्षेत्र से हो, देश का ख्यातनाम औद्योगिक घराना हो या फिर मीडिया हो या फिल्मी क्षेत्र हर क्षेत्र के युवक-युवतियों के बायोडेटा का नायाब खजाना है। संकोच नहीं, सम्पर्क करें : पदमचंद जैन -

सेवा के सरोकार
छात्रवृत्ति
मेडिकल शिक्षा
रोजगार
विधवा पेंशन

उक्त आवेदकों की जानकारी पूरी तरह से गोपनीय रखी जाती है।

अशोक सिरोया अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष | चंदराज सिंघवी राष्ट्रीय अध्यक्ष | डॉ. प्रकाश गोलेछा कोजन मंत्री | नरेन्द्र कुमार जैन राष्ट्रीय अध्यक्ष, यू.एस | वसंत जैन राष्ट्रीय संगठन मंत्री | संजय जैन कोर्डिनेटर | सुरेन्द्र कुमार जैन राष्ट्रीय प्रचार मंत्री

सेवा के पथ पर अग्रसर टीम आईजेवीओ

1662-बी, ए.पी. अपार्टमेंट, वैभव लॉन के पास, हनुमान मंदिर के सामने, मोतीडूंगरी रोड, जयपुर-04

फोन : 0141-2602626 / 4010196 email: neerapadamjain@gmail.com

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

हाय, हैलो छोड़िये, जय जिनेन्द्र बोलिए!

Ideal place for
Marriages, Conferences & Relaxation
Khanvel RESORT SILVASSA
09320023557
09824056861
022-26352635
022-26305555
follow us on:
/thekhanvelresort
/khanvelresort
www.khanvelresort.com
sales@khanvelresort.com

floorwalk
Surfaces INDIA FLOORING PVT. LTD.
WOODEN FLOORING
CARPET TILES
J. M. Dugar - 98202 33262
Amit Dugar - 98191 92285
Sumeet Dugar - 98339 83457
info@surfacesindia.co.in
www. surfacesindia.co.in
@surfacesindia

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा
सम्मान मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
Samrat Jewellers SJ
नवग्रह रत्नों के व्यापारी
मणिक, मोती, मूंगा, पन्ना, पुखराज, हीरा,
नीलम गोमेदक, लहसुनिया, नवग्रह रत्न अपनी राशी के
अनुसार रत्न धारण करने से हर समस्या दूर होकर,
स्वास्थ लाभ, समुद्र शाली, व हर क्षेत्र
में सफलता प्राप्त होती है
हमारे यहां सभी राशियों के रत्न हमेशा उपलब्ध रहते हैं
एक बार अवश्य संपर्क करें
अनोखीलाल नाहर जैन पंकज नाहर जैन
३१ - ए कीर्तीकर मार्केट, दादर पश्चिम, मुम्बई,
महाराष्ट्र, भारत - ४०००२८ फोन ०२२-२४३०६६४२
मो: ९८९२८०५०६९

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

डॉ. राजकुमार हिराचंद शहा
डॉ. निकीता राजकुमार शहा
डॉ. रितेश, डॉ. रीमा शहा
श्रीमती शिप्रा, सौमिल आर. शहा
रिवाय शहा
158, चिराग, शेर-ए पंजाब सोसायटी, महाकाली केव्हज रोड,
अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत- 400 093
दूरध्वनि - 022-022-35930361
क्लिनिक : 022-7400166631/32

'जैन एकता' से ही होगा जैन समाज का विकास व बढ़ेगा सम्मान
मिल कर कहें हम-सब जैन हैं
भंवरलाल पगारिया जैन
वरीष्ठ उपाध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
भूतपूर्व अध्यक्ष
अ.भा. श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, कर्नाटक शाखा
कार्यकारिणी सदस्य
अ.भा.श्वे.स्था. जैन कॉन्फ्रेन्स, दिल्ली
मुख्य मार्गदर्शक
श्री मरुधर केसरी जैन गुरु सेवा समिति, बैंगलोर
37, हॉस्पीटल रोड, बेंगलोर, कर्नाटक, भारत- 560053
फोन :- 080 22383557 मो. - 09448238429

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए, INDIA नहीं एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भारत को केवल BHARAT ही बोला जाए अभियान में क्या आप सहयोग देना चाहते हैं तो संपर्क करें-9322307908
Follow for More Updates
https://www.instagram.com/mainbharathun_?
अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें
https://www.instagram.com/mainbharathun_?

बाभुलगाव में वार्षिक यात्रा भक्तिभाव से संपन्न
भगवान के महामस्तकाभिषेक के साथ यात्रा का समापन

छत्रपति संभाजीनगर श्री 1008 वासुपूज्य दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बाभुलगांव, पिराचे, तहसील वैजापुर, जिला औरंगाबाद में 16 फरवरी, सोमवार को प्रतिवर्ष की भांति वार्षिक यात्रा महोत्सव का आयोजन सिद्धांत चक्रवर्ती आचार्य हेमसागरजी महाराज के आशीर्वाद से किया गया, इस अवसर पर भगवान वासुपूज्य का जन्म कल्याणक महोत्सव भी अत्यंत उत्साहपूर्वक मनाया गया।

प्रातः 9 बजे भगवान वासुपूज्य के चित्र की भव्य शोभायात्रा बाभुलगांव नगर में निकाली गई, शोभायात्रा में महिलाओं ने केसरिया वस्त्र तथा पुरुषों ने सफेद वस्त्र धारण किए थे, जगह-जगह श्रद्धालुओं एवं ग्रामवासियों द्वारा पुष्पवर्षा की गई तथा सुंदर रंगोलियां सजाई गईं, इसके पश्चात शकुंतला शांतीलाल पाटनी, सौ. अनीता सुशीलकुमार पाटनी, कविता मनोजकुमार पाटनी, शुभम हितेश, उत्कर्ष सी.ए., आदर्श, प्रतीक्षा पाटनी परिवार की ओर से धर्म ध्वजारोहण कर यात्रा का शुभारंभ किया गया, उपस्थित श्रद्धालुओं को छत्रपति संभाजीनगर के श्रीमती नगीनागबाई बबनलाल, नितीनकुमार, निलेश, रीना, रितिका, मिताली, ईशान, नियति अजमेरा परिवार तथा मनोजकुमार, सौ. नीता, तेजल, रौनक कासलीवाल परिवार की ओर से महाप्रसाद वितरित किया गया।

कार्यक्रम का संचालन राजाबाजार जैन मंदिर के पूर्व सचिव अशोक अजमेरा ने किया तथा मंगलाचरण रुपाली रावका ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम की शुरुआत भगवान के चित्र के समक्ष माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलन से हुई, जो दानदाता परिवार द्वारा संपन्न किया गया।

यात्रा में भगवान के इंद्र-इंद्राणी बनने का सौभाग्य सौ. कीर्ति वर्धमान पाटनी एवं वर्धमान शिखरचंद पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ। शांति मंत्र का मान सौ. नीता प्रकाशचंद बडजाते एवं नेहा शुभम बडजाते परिवार को मिला।

जलाभिषेक का मान विपीनकुमार, निलम, उन्नति, प्रज्वल पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ, इक्षुरस अभिषेक का मान हेमलता नितीन माणिकचंद चुडीवाल, नारियल रस जिनेंद्र दिनेश बाकलीवाल परिवार, आम्ररस शकुंतला देवी, शर्मिला, मनोजकुमार, संगीता, कमलकुमार कासलीवाल परिवार, अनार रस नम्रता, प्रितेश, चंचल अजमेरा, मौसंबी रस दिलीपकुमार, शांताबाई, रितिक, काजल अजमेरा, दुग्ध अभिषेक सोनाली नितीन चुडीवाल, मोना योगेंद्र पाटनी, दही अभिषेक सपना ललित पापड़ीवाल, रुपकेश किशोर गंगवाल, जितेंद्र सुरेंद्र कासलीवाल, शुभम कैलास पाटनी, नीरज राजकुमार पाटनी तथा घृत अभिषेक शोभाबाई अमोलकुमार, स्मिता, मोना पाटनी परिवार को प्राप्त हुआ।

सेब रस का मान कुसुमबाई रमेशचंद, जितेंद्र, महेंद्र, सतीश अजमेरा परिवार को मिला। सर्व औषधि अभिषेक का मान प्रकाशचंद, नीता बडजाते परिवार को मिला। चतुर्थ कलश पदमाबाई ठोले, सुगंधित कलश संकेतकुमार, निकेतन, स्वप्नील, आदिष्ठा पाटनी परिवार तथा पुष्पवृष्टि का मान दिलीपकुमार, राहुल, ऋषभ कासलीवाल परिवार को प्राप्त हुआ। मंगल आरती फुलचंद बिसनदास अजमेरा परिवार आदि के हस्ते भगवान का पंचामृत अभिषेक संपन्न हुआ।

भगवान के पालना झुलाने का सौभाग्य प्रियंका पारस झांजरी परिवार को प्राप्त हुआ। अर्चना फल फुलचंदजी अजमेरा की पुत्री द्वारा भी भगवान का पंचामृत अभिषेक किया गया। इस अवसर पर महावीर सेठी, देवेंद्र काला, विनीत लोहाडे, मनोज गंगवाल, महावीर ठोले, शिवूर के पूर्व सरपंच नितिन चुडीवाल सहित अनेक श्रद्धालु उपस्थित थे।

VALUE COUNTER MODEL - KM 9014A
UPDATES WITH NEW NOTES
NEW PRODUCT

FEATURES :
• Automatic start, stop and clear.
• With Batch, Add and Self-checking functions.
• UV, MG, IR and MT counterfeit detection.
• Automatic half-note, chained note detecting.
• Double-note detecting with IR.
• LCD turns red when detects fake note.

SPECIFICATIONS :
• Counting Display : 4 digits
• Batch Display : 3 digits
• Counting speed : 1000pcs/min
• Hopper Capacity : 300 notes
• Stacker Capacity : 200 notes
• Size of countable note : 50*110-90*190mm
• Power Supply : AC220V±10% 50Hz
• Power Consumption : ≤ 80W
• Size of box : 375*333*251 mm

KUSAM-MECO® An ISO 9001:2015 Company
Shop No. 18, 1st floor, CIDCO Shopping Complex, Plot No 9, Sector-7, Rajiv Gandhi Marg, Sanpada,Navimumbai-400705. INDIA. Tel.: 022-27754546, 27750662 / 0292
Email :sales@kusam-meco.co.in Web : www.kusamelectrical.com

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

जय कुमार नृपत्या
व सम्पूर्ण परिवार

A-602, चैतन्य टावर, प्रभादेवी, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400025

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जीयो और जीने दो के
विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

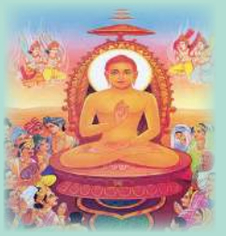

Raichand Choraria Jain
Mob. 09962584570
Mahendar Choraria Jain
Mob. 09841184570
Kamal Choraria Jain
Mob. 09841644570

Kiran Wire Netting Co.
96(Old No.58) Rasappa Chetty Street
Chennai, Tamilnadu, Bharat-600003
Ph.: 044 25353397/04425350986
E-mail: kwncom@gmail.com

अहिंसा परिग्रह और अनेकांत की त्रिवेणी के वाहक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

गणाधि पति गुरुदेव श्री तुलसी

आचार्य महाश्रमण जी

Padam Chand Patawari
Mob: 9413319188
Praveen Kumar Patawari
Mob: 9950305599

Shri Ram Nagar, 100ft Road,
Behind Kawadia Hospital, Rajsamand,
Rajasthan, Bharat-313326

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

उपवासाची कारणे अनेक...
मात्र शाबुदाणा एक...

कॅमल इन्स्टन्ट स्वच्छ, शुभ्र, निवडक व दाणेदार १ किलो व अर्धा किलोच्या पॅकमध्ये सर्व किराणा दुकानात उपलब्ध...

उपवासासाठी 'कॅमल' शाबुदाण्याचीच मागणी करा !

CAMEL SAGO ATUL FOOD PRODUCTS

कॅमल®
सुपरफाईन शाबुदाणा

अशोक बन्सीलाल पारख
मो.09225322496

२२६२, 'कॅमल हाऊस', आडते बाजार, अहमदनगर. फोन : ०२४१-२३४३८९६, २३४११९६

अतुल फुड प्रॉडक्टस्
प्लॉट नं. २८, २९, इंडस्ट्रियल इस्टेट, नगर-पुणे रोड, अहमदनगर. फोन : ०२४१-२५५१८१९
Email : atulparakh76@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

लफ्ज़ कम है, पर श्रद्धा भक्ति विश्वास से भरे हैं प्रीत की है रीत सच्ची हम तुम्हारे-तुम हमारे

अनेक क्षमताओं के समवाय दैदीप्यमान गुरूदेव आचार्य श्री विद्यासागर जी आपकी तपस्विता के उदय ने जन-जन के अंतःकरण में उनके प्रति श्रद्धा के समंदर की उत्ताल तरंगों को उछाल दी है। आचार्य श्री को निकटता से देखने परखने वाले अच्छी तरह जानते हैं. कि उनकी मनोवृत्ति कितनी उदात्त थी। उनका वाणी संयम कितना विलक्षण था, और उनके कार्य कितने परोपकार पारायण है, उनके निकट पहुंचते ही दर्शक सम्मोहित हो जाते थे, निर्निमेष उन्हें निहारते रहते थे।

हे श्रमण कुल तिलक गुरूदेव! आप वाह्य और अंतरंग दोनों प्रकार के व्यक्तित्व के सौरभ से श्री संपन्न, आपका वाह्य व्यक्तित्व, उनकी आकृति पर अभिमंत्रित था ललाट, आंखें, भोह, पलकें, कान, नासिका, ओष्टपोस्ट आदि अवयवों के योग से, बाल सुलभ सर्वांग सौंदर्य का वे वरण, अनुपमेय व्यक्तित्व और कृतित्व से अभि-मण्डित उनकी आकृति, शोभा-शालीनता के संग सुंदर तो है ही, उससे भी सुंदर आपका वैरागी अंतः प्रवृत्ति - प्रकृति - स्वभाव।

हे मूलाचार-समयसार के राज हंस गुरूदेव ! आप में समा गई चांद सी शीतल चांदनी, सूर्य सा प्रखर तेज, तारों की सी झिलमिलाहट और सागर सी गंभीरता, धरणी सा गजब का धैर्य, आपकी ऋतंभर प्रज्ञा को अनंत विस्तार देता था, जिसके प्रभाव से आप सदा निर्विचार स्थिति में रहने की साधना कर आत्मानंद की अप्रतिम अनुभूति करते रहते थे।

हे कर्मजा शक्ति के प्रतीक-सन्त शिरोमणी गुरूदेव! आपके पास चरित्र की निर्मलता, साधना की तेजस्विता, भावों की पवित्रता तथा विचारों की एक रूपता स्वाभाविक रूप से विन्यस्त हुई थी, जीवन को इन पवित्र गुणों द्वारा उर्ध्वगामी बनाने की कला के आप अप्रतिम साधक थे। हर पल जागरूकता से चेतन को जागृत बनाए रख अप्रमत्त जीवन जीते हुए अपने अनुगामियों को भी अप्रमत रहने का पाठ पढ़ाते हुए, उनके उत्तरोत्तर विकास का मार्ग प्रशस्त करते रहते थे, ऐसे भुवन भास्कर आचार्य श्री विद्यासागर जी महा मुनिराज।

हे जाग्रत मेघा के धनी गुरूदेव! आप एक ऐसे दिव्य सन्त थे, जिनका आधार जिनवाणी, जिनका आचार था वीतराग की दिशा में निरंतर गतिशीलता, रत्नत्रय की आराधना जिनके विचार थे, सत्य की अप्रतिम उपासना जिनका व्यवहार था, मृदु - करूणाशील, विनम्र, प्रशांत व सारणा, वारणायुक्त और जिनका स्वाभाविक स्वभाव था समय प्रबंधन, अत्यंत सामान्य किन्तु प्रभावशाली और वात्सल्य से परिपूर्ण शब्दों में गुम्फित उनका शंखनाद जन जन के अंतस्तल में उत्कीर्णित हो जाता था, और उनके प्रबोधन को आत्मसात कर, जीवन को धन्य बना लेने की प्रवृत्ति अत्यंत सहजता के संग अद्भुत हो जाती थी। आपने आव्हान किया था हर मनुष्य का - कि वह जीवन में प्रतिस्पर्धा नहीं, सहयोग की वृद्धि को अंगीकृत, तनाव नहीं पाले - प्रत्युत परस्पर प्रेम और सदभाव मैत्री के साथ सह-जीवन का अभ्यास करे, विचारों की संकीर्णता से नहीं, समरसता से समाधान करे। स्वयं के अहम को नहीं, बल्कि राष्ट्र को अर्हम बनने की दिशा प्रदान करे। हृदयहीनता नहीं - संवेदनशीलता का अभ्यासी बने और बने आत्म चिंतन, परमात्म चिन्तन के अभ्यासी, द्रव्य पूजन के संग, भाव पूजन के शुभमय सहयोग से चेतना का ऊर्ध्वारोहण करे।

-अनन्त शुभसंशाओ सहिताणमो आयरियाणं अन्तर्मना श्री आचार्य प्रसन्न सागर जी

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

SANAT BADJATYA JAIN

Mob. : 098260 75364

17/3, Old Palsia, Raj Kalyan, Indore,
Madhya Pradesh, Bharat - 452001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

समाजरत्न
सुभाष ओसवाल जैन
Mob. :- 09810045440

चेयरमैन : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली
अध्यक्ष : भगवान महावीर सुपर स्पेशलिटी हॉस्पिटल, रोहिणी, दिल्ली
अध्यक्ष : साऊथ दिल्ली, जैन समाज, नई दिल्ली
संरक्षक : अ. भा. श्वे. स्था. जैन श्रमण संघीय श्रावक समिति, नई दिल्ली
निर्देशक : महावीर देशना फाउंडेशन लिमिटेड, नई दिल्ली
ट्रस्टी : ऑल इंडिया श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेंस नई दिल्ली

Resi.: C-642, New Friends Colony, New Delhi -110025
Golemarket No. 011-23363729, 23344380
Off. 011-23854400 Email : oswalsubash@gmail.com

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जीवों को कमलजीवन देने आए
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

Kewal Chand Suresh Kr. Patni
Mob: 93310 07093

RISHAV TEXTILES (P) LTD.

158, Jamunalal Bajaj Street, 3rd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 007

190-A, Manicktalla Main Road, 2nd Floor,
Kolkata, West Bengal, Bharat - 700 054
Ph: 93314 73245

RANEKA INDUSTRIES LIMITED

AAR "H" Type Tight Lock Coupler with Balanced Draft Gear for Passenger Coaches & Locomotives.

AAR design High Tensile Center Buffer Coupler for Freight Wagons. - E & F Types

Magnet Frame Castings for Locomotives.

RIL-200 High Capacity Draft Gear with Min Energy Absorption Capacity of 45000 ftlb.

Control Arm Casting for Passenger Coaches (SG Iron Grade).

Bogies for Flat Container Wagons.

REGISTERED OFFICE & WORKS
Plot No. 15, 16 & 17, Sector -3, (Sagore),
Pithampur- 454774, Dist. Dhar (M.P.) INDIA
Ph.: +91 7292-256128, 256874, 329906
Fax : 91-7292-255410 | E-mail : rkjain@raneka.com

ADMINISTRATIVE OFFICE
H-101/A, 1st Floor, Metro Towers,
Near Mangal City Mall, PU-4, Scheme No. 54,
A.B. Road, INDORE - 452 010 (M.P.)
Ph.: 91-731-3018494, 2578844 | Telefax : 3018492

www.raneka.com

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Babulal Jain

Nirmala Jain

BABULAL JAIN
भ्रमणध्वनि : 09314336626

TRADE CENTRE

AUTHORISED DEALER :

- Jyoti Ltd.
- Kirloskar Brothers Ltd.
- DEC China
- L&T Limited
- Wilo Mather& Platt
- Shanthi Gears Limited
- Hindustan Composites Ltd.
- Raychem RPG Pvt. Ltd.
- Voith Turbo
- Sulzer Pumps India Pvt.Ltd.
- Beijing Power Equipment China
- Emerson India Pvt. Ltd.
- Forbes Marshall Pvt. Ltd.
- Victaulic Coupling
- Shell India Pvt. Ltd.
- W.H Brady &Company Ltd.

Trade Centre,Nirmala Tower, 2nd Floor, 288, Shopping Centre
Kota, Rajasthan, Bharat - 324007
अणुडाक : tradeneeraj@gmail.com

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Basant Kumar Chopra Jain
Mob. 09631740589

Post. Naharia Bazar,
Dist. Madhubani, Bihar, Bharat- 847108

भारत को 'भारत' ही बोला जाए   एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

युवा समाजसेवी, गौ सेवक कार्य सम्राट बैंगलुरू निवासी महेंद्र मुणोत के कार्यों की झलकियां

श्री वीरेश्वर देवालय बापूजी नगर द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम नृत्य उत्सव का आयोजन किया गया। श्री सविध्धा नाट्य अकादमी की छात्राओं ने मनभावन सांस्कृतिक प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने छात्राओं को पुरस्कृत किया। देवालय के पदाधिकारियों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

जय महादेव युवा संघ केंगेरी उपनगर द्वारा महाशिवरात्रि के पावन प्रसंग पर रविवार १५ फरवरी को श्री आई माता चामुंडेश्वरी मंदिर चेलेघाट्टा में १५ वा वार्षिकोत्सव श्री महाशिवरात्रि महोत्सव एक शाम भोलेनाथ के नाम का आयोजन है। कार्यक्रम में नागौर के भजन कलाकार महावीर सांखला एवं दिल्ली के मनोज रिया और ग्रुप प्रस्तुति देंगे। संघ के सदस्यों ने गौभक्त महेंद्र मुणोत को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया।

मैसूर रोड के बट्टरायनपुरा नई बडवाणे निवासियों के क्षेमाभिवृद्धि ट्रस्ट द्वारा आयोजित नगर देवताओं श्री अन्नम्मा देवी और बंडे महाकाली अम्मा देवी के ३६वें वार्षिक उत्सव का आयोजन हुआ। मारुति मेडिकल्स के गोसेवक विशेष अतिथि महेंद्र मुनोत ने देवताओं की पूजा कर आशीर्वाद प्राप्त किया, इसके बाद उन्होंने अन्नदान कार्यक्रम में सेवा भी दी। आयोजकों ने श्री मुणोत का सम्मान किया।

जय महादेव युवा संघ केंगेरी उपनगर द्वारा महाशिवरात्रि के पावन प्रसंग पर श्री आई माता चामुंडेश्वरी मंदिर चल गट्टा में १५ वा वार्षिकोत्सव श्री महाशिवरात्रि महोत्सव एक शाम भोलेनाथ के नाम हर्ष, उल्लास, श्रद्धा भक्ति के साथ मनाया गया। राजस्थान के भजन कलाकार महावीर सांखला ने एक से बढ़कर एक भजनों की प्रस्तुति दी, जिस पर श्रद्धालु देर रात तक झूमते रहे एवं ओम नमः शिवाय, हर हर महादेव के जय घोष से वातावरण भक्ति मय हो गया। मनोज रिया और ग्रुप दिल्ली ने विशेष झांकी प्रस्तुति दी,जिसने लोगों का मन मोह लिया। मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने अपने वक्तव्य में कहा भले ही आज के दिन हम भगवान शिव को बेलपत्र न अर्पित कर पाए या दुग्ध अभिषेक ना कर पाए, लेकिन हमारे मन में जो बुराइयां छुपी हुई है, उसको शिव के चरणों में अर्पित कर दें,तो शिव जी हमारी सभी मनोकामनाएं पूरी करेंगे। विशिष्ट अतिथि राजस्थान पत्रिका बेंगलुरु संपादक कुमार जिवेन्द्र झा ने उपस्थित जनसमूह को महाशिवरात्रि पर्व की शुभकामनाएं अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मनीष मुंडवा ने किया। संघ के सदस्यों एवं विभिन्न समाज के प्रमुखों ने अतिथियों को सम्मानित किया।

मुनेश्वरा स्वामी देवालय विजयनगर स्थित मारेनहल्लि में आयोजित गोपुर कलश स्थापना कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि महेंद्र मुणोत ने भगवान के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं अन्नदान कार्यक्रम में सेवा प्रदान की। आयोजकों ने अतिथियों को सम्मानित किया।

श्री आदिशक्ति चामुंडेश्वरी देवस्थान सोण्णेनहल्ली द्वारा बेंगलूर नगर देवता श्री अण्णम्मादेवी उत्सव का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि महेंद्र मुणोत ने देवी मां के दर्शन कर आशीर्वाद लिया एवं अन्नदान कार्यक्रम में सेवा प्रदान की। देवस्थान के जयराम एवं क्षेत्र के नागरिकों ने श्री मुणोत को सम्मानित किया।

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

नाटक मंचन से दी नेमीकुमार और राजुल विवाह की प्रस्तुति

टीकमगढ़: श्री दिगम्बर जैन नया मंदिर टीकमगढ़ मे अष्टिहानिका पर्व के मौके पर आयोजित श्री सिद्ध चक्र महामंडल विधान के अवसर पर अनुनय बालिका मंडल द्वारा भगवान नेमीकुमार और राजूल के विवाह की प्रस्तुति नाटक मंच के रूप में दी गई। नाटक का शुभारंभ मंगलाचरण के रूप में बालिका मंडल की बच्चियों द्वारा मनमोहक प्रस्तुति के साथ हुआ, इस मौके पर नाटक में श्रीकृष्ण के चचेरे भाई एवं जैन आगम के २२वें तीर्थंकर नेमीनाथ की विवाह की तैयारियां एवं वैराग्य के दृश्यों को दर्शाया गया, इस दौरान विवाह समारोह में वध के लिए लाए गए पशुओं की पीड़ा देखकर नेमीकुमार को वैराग्य उमड़ आता है और वह गिरनार पर्वत पर जाकर तपस्या करने लगते हैं, बाद में राजूल भी नेमीकुमार के लिए विलाप करती हैं और बाद में खुद भी आर्यिका दीक्षा लेकर तपस्या करती हैं, जिसे सुनकर समूचा सभागार भाव विभोर हो उठा, इससे पूर्व बालिका

मंडल की ओर नेमीनाथ राजूल के विवाह की तैयारियां, नेमीनाथ के तोरण पर बारात लेकर पहुंचने के बाद करूण पशुओं की चित्कार सुनकर तोरण से वापस लौटने, राजूल का विलाप उसके पश्चात नेमीनाथ राजूल का गढ़ गिरनार पर संयम ग्रहण कर मोक्ष जाने तक के दृश्यों को बताया गया। नाटक में रिमी, सिमी, पूजा, पलक, अंशिका, आस्था, मिनी, परी, गुनगुन, प्रतिभा, पूर्ति, डेंन्सि, नव्या, सानू, राज, यश द्वारा मुख्य किरदार की भूमिका निभाई गई। नाटक के दौरान राजकुमार नेमी की बारात समाजजनों द्वारा हर्षोल्लास से निकाली गई, तत्पश्चात उनके वैराग्य का चित्रण दिखाया गया, इस दौरान डॉक्टर शिखर चंद्र जैन,पंडित कमल कुमार शास्त्री, वीरेन्द्र सापोंन, श्रीमती दीक्षा जैन बुंदेलखंद फर्नीचर्स आदि उपस्थित थे। पुण्यार्जक परिवार संतोष जैन, संतोष मेडिकल द्वारा बालिका मंडल का स्वागत सम्मान एवं आभार व्यक्त किया गया।

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

इंजी. कैलाश चन्द्र जैन

महासचिव- बुन्देलखण्ड सांस्कृतिक एवं सामाजिक सहयोग परिषद, लखनऊ
प्रांतीय प्रकल्प संयोजक- भारत विकास परिषद,
अवध प्रान्त, उत्तर मध्य क्षेत्र - २
कार्यकारिणी सदस्य- श्री दिगम्बर जैन मंदिर, इंदिरा नगर, लखनऊ
सदस्य- भारतीय जैन मिलन (साकेत) लखनऊ
कोषाध्यक्ष- इंदिरानगर आवासीय महासमिति,लखनऊ
भ्रमणध्वनी - ९४१५४७०१४६
निवास: ९/३३६, इन्दिरा नगर, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत - २२६०१६

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Ashish Kamdar Jain

Ashish Kamdar & Co.

Office: 5, Hari Bhuvan, 1st Floor, Zaver Road,
Near Jain Derasar, Mulund West, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400 080

Resi : 201/202, Zenith Tower, A Wing, P K Road, Keshav Pada,
Near Kalidas Natya Mandir, Mulund West,
Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400 080
भ्रमणध्वनि : 98676 77272
अणुडाक : ashishkamdar_ca@yahoo.com

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Prakashchand Chhabra Jain Babita Chhabra Jain

Mob.: 9324004257

Ahinsha Beverages Pvt.Ltd.

1201, A-Wing, Oberoi Garden, Thakur Village,
Kandivali East, Mumbai, Maharashtra, Bharat - 400101
Telephone: 022-2885 3953, 2854 5715

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

RIDH KARAN RAKHECHA

Mob: 9874029800

Priya Twin Apartment 245, Debai Pukur Road,
Uttarpara Kotrung (M), West Bangal, Bharat- 712233

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

With Best Compliments

GURU RAJENDRA METALLOYS INDIA PVT LTD

G R METALLOYS PVT LTD

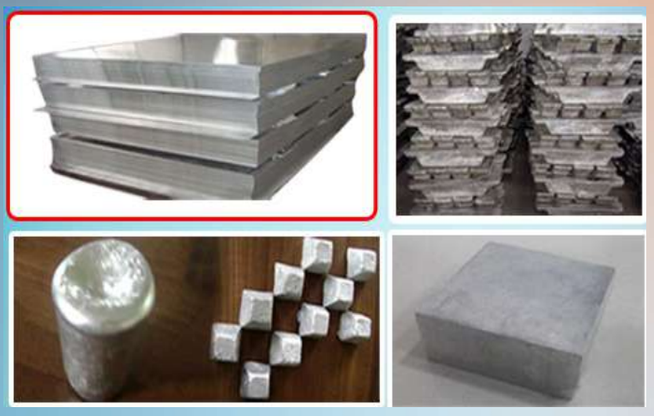

SHAH BABULAL DHANRAJJI JAIN

JAYANT BABULAL JAIN

SHAILESH BABULAL JAIN

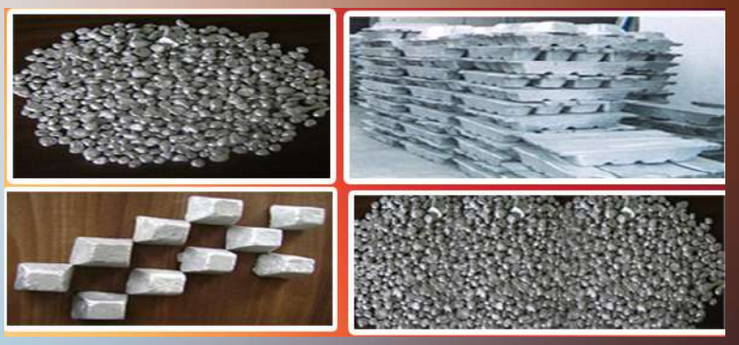

Manufactures of Aluminium Alloy Ingot, Aluminium Ingot, Aluminium Notch bar, Aluminium Shots, Aluminium Cubes

8, Gautam Vihar Society, Opp. Sukhsagar Complex, Aroma School Road, Ashram Road, Usmanpura, Ahmedabad, Gujarat , Bharat– 380 013.

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

परस्परोपग्रहो जीवानाम

ASIAN EYE HOSPITAL AND LASER INSTITUTE
Where every eye smiles
ससुन रोड, पुणे

Man Kanhaiya Eye Bank
Donate Vision

डॉ. कांकरियांचे
साई सूर्य नेत्रसेवा
दृष्टी साजरी करा
वर्धमान, माणिकचौक, अहमदनगर

HELPLINE : 8888 98 2222 / 911 2288 611
0241-2346317 / 2341417 / 2346017
saisuryaa85@yahoo.com
www.saisuryasupervision.com

रुग्णांनी येतांना जुने रिपोर्टस् बरोबर घेवून यावीत.

Nirmal

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

आचार्य भिक्षुजी

आचार्य तुलसीजी

आचार्य महाप्रज्ञजी

आचार्य महाश्रमणजी

Dalpat Lodha
Mob. : 93145 14085

LODHA IMPEX
JAIPUR-MUMBAI

परस्परोपग्रहो जीवानाम

Manufacturers & Exporters of
READYMADE GARMENTS

SPL-E-100, Garments Zone, RIICO, E.PI.P, Sitapura Indl. Area,
Tonk Road, Jaipur, Rajasthan, Bharat - 302022
Tel.: 91-141-2770465-466-467-468 | Fax : 91-141-2770462
email : jaipur@thelodhagroup.com / lodhaimpexsatyam.net.in
Visit us at : www.thelodhagroup.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

१०० रुपए हों, पर लगे कि सिर्फ १० रुपए हैं: समृद्धि का गुप्त मंत्र

'असली संपत्ति वह नहीं जो दिखती है, बल्कि वह जो दिखने से बच जाती है।'

जैन समुदाय को भारत की नंबर १ कम्युनिटी बनना है तो एक सिद्धांत अपनाना होगा - १०० रुपए हों, पर दुनिया को लगे कि सिर्फ १० हैं। क्यों जरूरी है यह सिद्धांत?

जब आप १०० दिखाते हैं, तो चार खतरे पैदा होते हैं:

१. लोगों की जलन का शिकार होकर बुरी नज़र का निशाना बनते हैं।

२. रिश्तेदारों की अपेक्षाएं बढ़ जाती हैं।

३. व्यापार में प्रतिस्पर्धी आपकी रणनीति भांप लेते हैं।

४. कई परिवारों में दिखावे की होड़ ने रिश्तों में दूरी और कर्ज का बोझ बढ़ा दिया है।

वॉरेन बफेट का सबक

दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति वॉरेन बफेट के पास १०० अरब डॉलर से अधिक हैं, फिर भी वे १९५८ में खरीदे गए ३ **BHK** में रहते हैं, उनके पास १०० हैं, पर दुनिया को लगता है कि १० हैं, वे जानते हैं कि दिखावा सुरक्षा को कमजोर करता है।

यहूदी समुदाय का राज

आर्थिक रूप से सबसे सफल यहूदी समुदाय का सिद्धांत है - 'अपनी संपत्ति का केवल १०% दुनिया को दिखाओ।' १०० कमाओ, ९० बचाओ, सिर्फ १० का जीवन जियो।

जैन धर्म का मूलमंत्र: अपरिग्रह

'अपरिग्रह' यानी अपव्यय का त्याग, हमारे तीर्थंकरों ने सिखाया:

⇨ जितना कम दिखोगे, उतना सुरक्षित रहोगे

⇨ जितना सादा रहोगे, उतना स्वतंत्र रहोगे

⇨ जितना संतोष में रहोगे, उतना समृद्ध होगे

कैसे अपनाएं यह सिद्धांत?

⇨ आयोजन सादगी से करें, क्षमता होते हुए भी संयम दिखाएं

⇨ रहन-सहन साधारण रखें, एक से अधिक गाड़ियों का प्रदर्शन न करें

⇨ बच्चों को संस्कार दें - प्रतिष्ठा प्रदर्शन में नहीं, चरित्र में है

⇨ सोशल मीडिया पर हर खरीदारी और यात्रा को न दिखाएं

दान में दिखावा न करे, बोली एवं तख्ती से दूरी बनाते हुए संपत्ति का संयमित और समाज उपयोगी खर्च करना ही सही नीति है।

१०० होकर १० दिखने के फायदे

⇨ कोई जलन नहीं, कोई दुश्मनी नहीं

⇨ बच्चे संस्कारी और जिम्मेदार बनेंगे

⇨ संपत्ति पीढ़ियों तक सुरक्षित रहेगी

⇨ मानसिक शांति और पारिवारिक सुख

याद रखें

⇨ १०० कमाओ, पर दिखाओ सिर्फ १०

⇨ जितना कम दिखोगे, उतनी कम नज़र लगेगी

⇨ जितनी सादगी, उतनी आज़ादी

वॉरेन बफेट कहते हैं - 'नियम नंबर १: कभी पैसा मत गंवाओ।'

संपत्ति बचाने का सबसे आसान तरीका है - दिखावे से बचो।

आइए! 'अपरिग्रह' को जीवन में उतारें। १०० हों, पर दुनिया को लगे कि १० हैं, यही सच्ची समृद्धि है।

'सादगी में है सबसे बड़ी शान और सबसे बड़ी सुरक्षा।'

- मानकचंद राठौड़

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

Mukesh Jain
Mob.: 9437210207

शुद्धता ही अमृत है, प्यार ही ज्वेलरी है...

AMRUT KALASH
Jewallars
Gold & Silver Ornaments
916
BIS CERTIFIED

A.T. Patnagada, Dist. Bolangir, Orissa, Bharat-767025

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार
महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

पूरनमल जैन 'सेठी'
: पूर्व अध्यक्ष :
भगवान महावीर हॉस्पिटल एण्ड रिसर्च सेन्टर, राँची
104, पारस अपार्टमेन्ट, कचहरी रोड, राँची, झारखण्ड, भारत- 834001
दूरध्वनि- 6201144633 भ्रमणध्वनि.-09431115535

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें

महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

B. K. JAIN

ACCUSPIRALS

AN ISO 9001:2000 Company

MFRS :

QUALITY GEARS
SPIRAL BEVEL, STRAIGHT BEVEL, WORM AND
WORM WHEELS, GEAR BOXES & PRECISION COMPONENTS

Works :
#D-424, 425, 10th main, 2nd Stage,
Peenya Industrial Estate, Bangalore, Karnataka, Bharat-560 058
दूरध्वनि : +91-80-28362280 / 28364749 / 51171539
Telefax: +91-80-28360814 / भ्रमणध्वनि : 09341232704
अणुडाक : contact@accuspirals.com
अंतरताना : www.accuspirals.com

Resi :
#320, 1st Block, 5th Cross,
R.T. Nagar, Bangalore
Karnataka, Bharat-560 032
दूरध्वनि : +91-80-23430115
Telefax: +91-80-23332964

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

HANUMANMAL DUGAR JAIN

16-B, Robert Street, Ground Floor, Room No.2,
Kolkatta, West Bengal, Bharat-700012
दूरध्वनि : 033-22366360, Fax : 033-22379940
भ्रमणध्वनिः 09331037159
अणुडाक : hmdugar@gmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

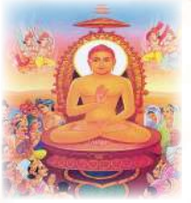

जीयो और जीने दो के विचारक तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

कैलाश जैन भारती - श्रीमती सन्तोष जैन
सन्दीप जैन - श्रीमती सलौनी जैन
भारतेन्दु जैन - श्रीमती ज्योती जैन,
सन्मति जैन - श्रीमती अनुष्का जैन

अरिहन्त इण्डस्ट्रीज

४१०/९३, नाई बाड़ा चौक, लखनऊ, उत्तरप्रदेश, भारत-२२६००३
भ्रमणध्वनि : ९४५२०१७९८४, ९४१५०६१३५६, ९४५२०१७९८५

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

भव्यातिभव्य चादर महोत्सव का आयोजन

जैसलमेर: राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत ने जैसलमेर के डेडानसर मैदान में तीन दिवसीय चादर महोत्सव की शुरूआत की। गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सुरीश्वर जी महाराज की निश्रा में आयोजित कार्यक्रम के पहले दिन धर्मसभा को संबोधित करते हुए आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि भारत की सांस्कृतिक एकात्मता, सामाजिक सद्भाव एवं समरसता में दादागुरु परंपरा का अहम योगदान है। सैंकड़ों की संख्या में दादा बाड़ियां धार्मिक अनुष्ठानों, परपंरा, लेखन, आध्यात्म और संस्कृति की वाहक बनी। कार्यक्रम का विशेष आकर्षण ७ मार्च को विश्वभर में एक साथ १ करोड़ ८ लाख श्रद्धालुओं द्वारा सामूहिक दादागुरु इकतीसा पाठ का ऐतिहासिक महासंकल्प रहा। महोत्सव स्थल से पहले आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने जैसलमेर किले में दादा जिनदत्त सूरि की पवित्र चादर का दर्शन किया।

- ⇨ विभिन्न देशों के राजनीतिक हालात देखते हुए दादागुरु की शिक्षा को अपनाना आज जरूरी
- ⇨ दादागुरू और चादर महोत्सव पर विशेष सिक्का और डाक टिकट का विमोचन
- ⇨ पद्मश्री डॉ. डी आर मेहता का सम्मान

कार्यक्रम का आयोजन दादा गुरूदेव श्री जिनदत्तसुरि चादर महोत्सव समिति के अंतर्गत हुआ। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, विश्व हिंदू परिषद, हिन्दू आध्यात्मिक एवं सेवा संस्थान, विद्या भारती तथा अनेक सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं के प्रतिनिधि कार्यक्रम में सहभागी बनें। इस विराट महोत्सव के स्वप्न दृष्टा पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञ सागर जी थे। चादर महोत्सव समिति के चेयरमैन महाराष्ट्र सरकार के मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा एवं संयोजक जीतो के पूर्व चेयरमैन तेजराज गोलेछा थे। आयोजन में विभिन्न भारतीय परंपराओं के करीब ४०० संतों सहित करीब २० हजार श्रद्धालुओं की तीन दिवसीय कार्यक्रम में मौजूदगी रही।

दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त सूरि चादर समिति के तत्वावधान में संपन्न कार्यक्रम में इस अवसर पर मंच पर आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत, गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरि, आचार्य श्री मनोज्ञ सागर सूरि, महोत्सव समिति के अध्यक्ष मंगल प्रभात लोढ़ा, जैसलमेर की पूर्व महारानी रासेश्वरी राज्य लक्ष्मी, पद्मश्री डॉ. डी. आर. मेहता, राष्ट्रीय संयोजक तेजराज गोलेच्छा, समन्वयक प्रकाश चंद लोढ़ा और समायोजक महेंद्र भंसाली मौजूद रहे।

मंच के दोनों तरफ़ जैन एवं सनातन धर्म के संतों के सान्निध्य में कार्यक्रम ने आध्यात्मिक गरिमा प्राप्त की।

आरएसएस प्रमुख का संबोधन

जैसलमेर दादा गुरुदेव जिनदत्त सूरि चादर महोत्सव जैसलमेर ने कहा कि दादागुरु की परंपरा में दिखाई देने वाला चमत्कार दरअसल सनातन संस्कृति के उस भाव का प्रतीक है, जो समस्त सृष्टि में एकत्व का संदेश देता है, हमारे पूर्वजों ने गहन आकलन के बाद यही सत्य बताया है कि जीवन में विविधता अवश्य है, लेकिन यदि केवल विविधता को ही जगह दी जाए तो एकता की जगह अनेकता दिखाई देती है। चादर महोत्सव में अपने संबोधन में कहा कि जैन दर्शन हमें सिखाता है कि जो जहाँ है, वहीं से आगे बढ़कर ईश्वर तक पहुँच सकता है। भगवान तक पहुँचने के अनेक मार्ग हैं, लेकिन यदि श्रद्धा और विश्वास के साथ उस मार्ग पर चला जाए तो अंततः भगवान का साक्षात्कार अवश्य होता है। उन्होंने बताया कि दादा जिनदत्त सूरि ने समाज में आपसी भेदभाव को मिटाने का कार्य किया। दादागुरु ने राजाओं से लेकर समाज के प्रत्येक वर्ग को सही राह दिखाई और पूरी दुनिया को एकता का पाठ पढ़ाया।

वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि आज चारों ओर हालात विकट दिखाई दे रहे हैं। महायुद्ध जैसी स्थितियों को टालने के प्रयास हो रहे हैं, लेकिन दुनिया में झगड़े इसलिए होते हैं क्योंकि हम अपने वास्तविक एकत्व को पहचान नहीं पाते, यदि हम इस एकत्व को पहचान लें तो अधिकांश समस्याओं का समाधान अपने आप हो सकता है। उन्होंने कहा कि मूल रूप से सभी में एक ही तत्व है, अंतर केवल व्यवस्था का है, ऊँच-नीच का नहीं। समाज में सभी प्रकार के भेदभाव को समाप्त करना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि जहाँ-जहाँ **शेष पृष्ठ ४० पर...**

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Kamal Doshi
Mob : 9830340967

Arpit Doshi
Mob : 9007725000

SHREE SHUBHAM TOYS

48, Ezra Street, 5th floor, Room No 506,
Giria Trade Centre Kolkata - 700 001
Ph: +91 33 4061 9973 Email: arpit_toys@yahoo.in

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

PRADEEP KUMAR BHANSALI
9840419164

VIVEK BHANSALI
9840400095

GRISHA VENTURES

1/870, Harichandran Street, Padiyanallur, Redhills,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600052
Email : info.grishaventures0 gmail.com

ROHIT BHANSALI
9566121500

ROYAL PLAST
Manufacturers Of Plastic Recycled Granules
No.100, Redhills Dharkas Road, Athivakkam, Redhills,
Chennai, Tamil Nadu, Bharat-600 052.
Email : royalplastchennai@gmail.com

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

Adv. SUNIL M. KALA JAIN
Mob: 9822034331

Sarvesh Sunil Kala
B. Com. M.B.A
Income tax & GST Consultant
Chh. Sambhajinagar(Aurangabad)

205 Shanta Complex, Nutan Colony,
Aurangabad, Maharashtra, Bharat - 431001

भारत को 'भारत' ही बोला जाए

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

Introducing Precision Laser Cutting of ...
Pipes, Tubes & Channels

CNC Laser Tubes & Pipes
CNC Laser Metal Sheet
Precision Laser Welding

CNC Tubes & Pipes Bending
CNC Power Press Brakes
CNC Lathes & Machining Shop

VINIDIUM LASER
For Technical & Sales Queries:
9322863370
9867977922
vinidiumlaser@gmail.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!

पृष्ठ ३८ से... आप जाते हैं, वहाँ वे सभी को एक ही परिवार माने, सुख-दुख में साथ रहने वाला, साथ बैठने और भोजन करने वाला।

अपने संबोधन के अंत में उन्होंने कहा कि वर्तमान समय चुनौतीपूर्ण है और समाज को सजग रहने की आवश्यकता है, यदि देश के लिए जीने और आवश्यकता पड़े तो मरने का संकल्प समाज में जाए, तो हर संकट का सामना किया जा सकता है।

गुरुदेव का संबोधन

चादर महोत्सव के अवसर पर आयोजित धर्मसभा को संबोधित करते हुए गच्छाधिपति जिनमणिप्रभ सूरि ने अपने संबोधन में कहा कि कार्यक्रम में विभिन्न हिंदू संतों की उपस्थिति से आयोजन की गरिमा और भी बढ़ गई है, उन्होंने कहा कि जब इस महोत्सव का विचार सामने आया था, तभी से यह स्पष्ट था कि यह केवल एक आयोजन नहीं, बल्कि दादागुरु की महिमा को जन-जन तक पहुँचाने का माध्यम बनेगा।

आचार्य श्री ने कहा कि आज जो भव्य आयोजन दिखाई दे रहा है, वह दादागुरु के श्रद्धालुओं की आस्था और समर्पण का परिणाम है, श्रद्धालुओं ने मिलकर एक स्वप्न को साकार कर दिखाया है, उन्होंने कहा कि दादागुरु की कृपा और उनकी शिक्षाओं का ही प्रभाव है कि यह महोत्सव इतने व्यापक रूप में संपन्न हो रहा है।

उन्होंने आगे कहा कि देश के युवाओं को सही दिशा और सन्मार्ग की प्रेरणा देना आज समय की सबसे बड़ी आवश्यकता है, इस दिशा में संत समाज की महत्वपूर्ण भूमिका है, उन्होंने उपस्थित सभी संतों से आह्वान किया कि वे युवाओं को संस्कार, संयम और सदाचार का मार्ग दिखाएँ, ताकि समाज और राष्ट्र का भविष्य सुदृढ़ बन सके।

नगर उदघाटन में भक्ति और श्रद्धा का सैलाब

धर्मसभा से पहले जैसलमेर के महोत्सव स्थल पर पूज्य गच्छाधिपति, आचार्य, उपाध्याय, गणि, श्रमक-श्रमिणों का मंगल प्रवेश हुआ। लाभार्थी परिवारों ने नगर उद्घाटन किया, चादर महोत्सव समिति के चेयरमैन मंगल प्रभात लोढ़ा ने कहा कि यह आयोजन केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर आस्था, एकता और आध्यात्मिक जागरण का महाअभियान है, पूरी जैसलमेर नगरी इस आध्यात्मिक आयोजन की साक्षी बनी हुई है। सात मार्च को विश्वभर के विभिन्न नगरों में श्रद्धालु अपने-अपने स्थानों से एक साथ दादागुरु इकतीसा पाठ करेंगे, जिससे आध्यात्मिक चेतना की सामूहिक तरंग उत्पन्न होगी, इस विराट संकल्प के प्रेरणास्रोत पूज्य आचार्य श्री जिन मनोज्ञ सागर जी हैं, जिनकी प्रेरणा से यह आयोजन वैश्विक आध्यात्मिक आंदोलन का रूप ले रहा है। दादा गुरूदेव श्री जिनदत्तसुरि चादर महोत्सव में ८७१ वर्षों बाद पहली बार चादर का विधिवत अभिषेक हुआ, जैसलमेर किले से भव्य वरघोड़े के साथ चादर को महोत्सव स्थल पर लाया गया।

तीन दिन दादागुरू की महिमा और आस्था से जुड़े विभिन्न आयोजन

आयोजन समिति के सचिव पदम टाटिया ने बताया कि जैसलमेर में चादर महोत्सव के दूसरे दिन ७ मार्च को जैसलमेर किले से चादर वरघोड़ा निकला। इसके बाद १ करोड़ ८ लाख श्रृद्वालु पूरे विश्व में दादा गुरू इकतीसे का पाठ किया। दोपहर में चादर अभिषेक और पूजा हुयी, सांस्कृतिक संध्या में प्रख्यात संगीतकार भक्ति महोत्सव में अपनी प्रस्तुति दी। पूज्य उपाध्याय मनितप्रभ सागरजी की ओर से लिखित 'द यूनिवर्सल ट्रूथ' एवं डॉ विद्युत्प्रभा श्रीजी की पुस्तक 'गुरुदेव' का विमोचन हुआ। आठ मार्च को एक विशिष्ट कार्यक्रम का आयोजन हुआ एवं उपाध्याय महेन्द्रसागर महाराज को आचार्य पद प्रदान किया गयाा साथ ही गणिनी पद समारोह भी आयोजित हुआ। इसी दिन चादर अभिषेक जल और वासक्षेप का वितरण हुआ।

पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञ सागर जी प्रेरणा से महोत्सव

दादागुरू इकतीसा समिति के राष्ट्रीय संयोजक ज्योति कोठारी ने बताया कि तीन दिवसीय महोत्सव के दूसरे दिन सात मार्च को १ करोड़ ८ लाख श्रृद्वालु दादागुरू इकतीसा का पाठ किया, कार्यक्रम में विश्व हिंदू परिषद के संपूर्ण भारत के करीब ३० हजार मिलन एवं सत्संग केंद्रों, देशभर की सभी दादाबाड़ियां, विद्याभारती राजस्थान के १००० स्कूलों, सभी जैन मंदिरों और अनेक हिंदू मंदिरों में दादागुरू इकतीसा का सामूहिक पाठ किया।

श्रद्धालुओं की अटूट आस्था का केंद्र है पवित्र चादर

जैसलमेर जैन ट्रस्ट के अध्यक्ष महेंद्र सिंह भंसाली ने कहा है कि प्रथम दादागुरु आचार्य श्री जिनदत्त सूरी ११वीं शताब्दी के महान आध्यात्मिक आचार्य माने जाते हैं, परंपरानुसार अजमेर में राजा अर्णोराज द्वारा प्रदत्त भूमि पर उनका अग्नि-संस्कार हुआ, जहाँ अग्नि-संस्कार के समय चादर का नहीं जलना एक अलौकिक घटना के रूप में प्रतिष्ठित हुआ, जो आज भी श्रद्धालुओं की अटूट आस्था का केंद्र है। ऐतिहासिक उल्लेख के अनुसार लगभग डेढ़ शताब्दी पूर्व जैसलमेर के महारावल ने महामारी शमन हेतु अनहिलपुर पाटन से यह चादर मंगवाई थी। वर्तमान में यह चादर जैसलमेर दुर्ग स्थित श्री जिनभद्र सूरी ज्ञान भंडार में सुरक्षित है, इसी दिव्य चादर के श्रद्धालुओं द्वारा सार्वजनिक दर्शन हेतु प्रथम बार यह महोत्सव आयोजित किया गया।

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

Bimal Bhansali
Mob: 9312243811
Nikhil Bhansali
Mob: 9990713090

Bhansali Polytech
(A Unit of Injection Moulding)
F-119, Sector-2, Dsiidc, Bawana, Delhi, Bharat-110039
E-mail: bhansalipolytech@gmail.com
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

BHERULAL PUKHRAJJI GADIA
Mob: 9845074672
PRIME GROUP
AHORE / BANGALORE
27, Flat No. 201, Shankararutam Building 2nd Cross,
Chikkanna Garden, Shankarmutt Road Shankarpuram,
Bangaluru, Karnataka, Bharat- 560004

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनायें

M. SUSHIL KUMAR BOHARA
Mob.: 9443352884
M/S. SUMANGALI JEWELLERS
No.15, Thiruvoodal Street, Tiruvannamalai,
Tamil Nadu, Bharat - 606601
Ph.: 04175-222852/53 / Mob.: 9025233972
email: info@sumangalijewellers.in
BIS 100% HALL MARKED JEWELLERY
भारत को 'भारत' ही बोला जाए एक राष्ट्र-एक नाम 'भारत'

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

दानमल जैन
भ्रमणध्वनि: ९४१४८४९८३७

जेतपुर साड़ी हाऊस
विक्रम : ९४१४१२७०५१,
नरेन्द्र : ९४१३६६१३५१
दूरध्वनि : ९४१३४६७०५१

श्रद्धा साड़ीज
रमेश ९४१४१३५१४५, प्रकाश : ९४१४४४०८५४ दूरध्वनि : ९५३०१२००५१
पेटी का नोहरा, मोती चौक, जोधपुर, राजस्थान, भारत-३४२००१

जोधाणा साड़ीज
अयुष ७७९२०९००००
जे. के. नर्सिंग होम की गली, प्रथम सी रोड सरदारपुरा,
जोधपुर, राजस्थान, भारत-३४२००१

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!!!

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन

मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी 'राष्ट्र रत्न' से सम्मानित, महेंद्रसागरजी बने आचार्य

राज्यपाल ने दी शुभकामनाएं, धार्मिक पुस्तकों का विमोचन, भव्य आयोजनों के साथ संपन्न हुआ चादर महोत्सव

जैसलमेर: स्वर्णनगरी जैसलमेर में आयोजित तीन दिवसीय भव्य दादागुरुदेव चादर महोत्सव का आज अंतिम दिन विभिन्न धार्मिक और आध्यात्मिक आयोजनों के साथ संपन्न हुआ, इस अवसर पर गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी महाराज को राष्ट्र रत्न की उपाधि से सम्मानित किया गया। यह सम्मान महाराष्ट्र सरकार के मंत्री मंगल प्रभात लोढ़ा द्वारा सम्मान पत्र प्रदान कर दिया गया, साथ ही दादागुरु श्री जिनदत्त सूरि चादर महोत्सव समिति, जैसलमेर जैन ट्रस्ट और आयोजन से जुड़ी सभी समितियों की ओर से सूरि सम्राट की उपाधि प्रदान की गई, उपाध्याय प्रवर श्री महेंद्रसागरजी को आचार्य पद से अलंकृत किया गया।

राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने फोन पर दी शुभकामनाएं

दादागुरु श्री जिनदत्त सूरि चादर महोत्सव समिति के राष्ट्रीय सचिव पदम टाटिया ने बताया कि इस अद्भुत समारोह के हजारों श्रद्धालु साक्षी बने। समारोह में राजस्थान के राज्यपाल हरिभाऊ बागड़े ने दूरभाष के माध्यम से अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित कीं। राज्यपाल ने कहा कि उनकी स्वयं जैसलमेर आकर चादर महोत्सव में उपस्थित रहने की इच्छा थी, लेकिन अपरिहार्य कारणों के चलते वे कार्यक्रम में शामिल नहीं हो सके, उन्होंने जैन समाज के सभी श्रद्धालुओं को इस भव्य आयोजन के लिए बधाई देते हुए आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी को राष्ट्र रत्न सम्मान मिलने पर शुभेच्छाएँ दीं। राज्यपाल ने कहा कि ऐसे आयोजनों से राजस्थान में धर्म और अध्यात्म की भावना को नई ऊर्जा मिलती है।

उपाध्याय प्रवर श्री महेंद्रसागरजी को मिला आचार्य पद

महोत्सव के दौरान एक ऐतिहासिक क्षण तब आया जब पूज्य अध्यात्म योगी उपाध्याय प्रवर श्री महेंद्रसागरजी को आचार्य पद से अलंकृत किया गया। यह प्रतिष्ठित उपाधि गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी द्वारा विधिवत प्रदान की गई, इस अवसर पर देश-विदेश से आए साधु-साध्वी भगवंतों, संत-महात्माओं और हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति रही।

आचार्य पद की यह उपाधि जैन समाज के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण मानी जा रही है, श्रद्धालुओं ने जयघोष के साथ आचार्य श्री महेंद्रसागरजी म. सा. का अभिनंदन किया और इसे चादर महोत्सव का ऐतिहासिक क्षण बताया, इसके साथ ही कार्यक्रम में गणिनी पद समारोह का भी आयोजन किया गया।

चातुर्मास कार्यक्रम की घोषणा

महोत्सव के समापन अवसर पर साधु साध्वियों के आगामी चातुर्मास प्रवास कार्यक्रम की घोषणा भी की गई, जिसे लेकर श्रद्धालुओं में विशेष उत्साह देखने को मिला।

भव्य धार्मिक अनुष्ठानों, संत-महात्माओं के सान्निध्य और हजारों श्रद्धालुओं की उपस्थिति के बीच संपन्न हुआ यह चादर महोत्सव आस्था, श्रद्धा और आध्यात्मिक ऊर्जा का अद्भुत संगम बन गया। कार्यक्रम गच्छाधिपति आचार्य श्री मणिप्रभ सूरी जी की पावन निश्रा में सम्पन्न हुआ।

चादर महोत्सव के अंत में सभी श्रद्धालुओं को चादर अभिषेक जल और वासक्षेप को वितरण किया गया।

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

उत्तम आर. जैन
अध्यक्ष - राष्ट्रवादी काँग्रेस पार्टी सेवादल मुंबई प्रदेश
मो : 9699887999
संपर्क कार्यालय : 30/36, 1-ए, जयहिंद इस्टेट, रुम नं. 3-ए,
2 रा मजला, भुलेश्वर, कालबादेवी, मुंबई, महाराष्ट्र, भारत - 400002
E-mail: uttamjain113@gmail.com

INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम
'भारतवर्ष' लिखवायें

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर विशेषः-
जीवन में अपरिग्रह अपना लें तो सभी समस्याएं मिट सकती हैं

''मधुरिमा कंठ में न होती तो शब्द विषपान बन गया होता
आस्था दिल में न होती तो हृदय पाषाण बन गया होता
प्रभु वीर से लेकर अब तक अगर ऐसा जिन धर्म न मिलता
तो यह संसार वीरान बन गया होता''

तिर्थंकर महावीर अहिंसा और अपरिग्रह की साक्षात् मूर्ति थे, वे सभी के साथ समान भाव रखते थे और किसी को भी कोई दुःख नहीं देना चाहते थे। पंचशील सिद्धान्त के प्रवर्तक एवं जैन धर्म के चौबीसवें तीर्थंकर महावीर स्वामी मूर्तिमान प्रतीक थे, जिस युग में हिंसा, पशुबलि, जात-पात के भेदभाव का बोलबाला था, उसी युग में महावीर ने जन्म लिया।

तीर्थंकर महावीर ने अपने प्रवचनों में धर्म, सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह, क्षमा पर सबसे अधिक जोर दिया। त्याग और संयम, प्रेम और करुणा, शील और सदाचार ही उनके प्रवचनों का सार था। तीर्थंकर महावीर ने चर्तुविध संघ की स्थापना की, देश के भिन्न-भिन्न भागों में घूमकर महावीर ने अपना पवित्र संदेश फैलाया, उन्होंने दुनिया को पंचशील के सिद्धान्त बताए, इसके अनुसार ये सिद्धान्त सत्य, अपरिग्रह, अहिंसा और क्षमा हैं। उन्होंने दुनिया को सत्य एवं अहिंसा जैसे खास उपदेशों के माध्यम से सही राह दिखाने की कोशिश की। अपने अनेक प्रवचनों से मनुष्य का सही मार्गदर्शन किया।

महावीर स्वामी ने हमें अहिंसा का पालन करते हुए सत्य के पक्ष में रहते हुए किसी के हक को मारे बिना, किसी को सताए बिना, अपनी मर्यादा में रहते हुए पवित्र मन से लोभ-लालच किए बिना, नियम में बंधकर सुख-दुःख में संयम भाव में रहते हुए आकुल-व्याकुल हुए बिना, धर्म संगत कार्य करते हुए 'मोक्ष पद' पाने की ओर कदम बढ़ाते हुए दुर्लभ जीवन को सार्थक बनाने का संदेश दिया। उन्होंने जो बोला सहज रूप से बोला, सरल एवं सुबोध शैली में बोला, सापेक्ष दृष्टि से स्पष्टीकरण करते हुए बोला। आपकी वाणी ने लोक हृदय को अपूर्व दिव्यता प्रदान की, आपका समवशरण जहां भी गया, वह कल्याण धाम बन गया।

महावीर स्वामी कहते हैं कि धर्म सबसे उत्तम मंगल है। अहिंसा, संयम और तप ही धर्म हैं जो धर्मात्मा है, जिसके मन में सदा धर्म रहता है, उसे देवता भी नमस्कार करते हैं। धर्म से वृत्तियों का उन्नयन होता है। धर्म भावना से चेतना का शुद्धिकरण होता है, धर्म व्यक्ति के आचरण को पवित्र एवं शुद्ध बनाता है, धर्म से सृष्टि के प्रति करुणा एवं अपनत्व की भावना उत्पन्न होती है, इसीलिए महावीर ने कहा:

''एगा धम्म पडिमा, जं से आयो पवज्जवजाए''

अर्थात् धर्म ऐसा पवित्र अनुष्ठान है जिससे आत्मा का शुद्धिकरण होता है। महावीर ने प्राणीमात्र की हितैषिता एवं उनके कल्याण की दृष्टि से धर्म की व्याख्या की, धर्म के सिवाय संसार में कोई भी मनुष्य का रक्षक नहीं है।

महावीर स्वामी ने मानव भव दुर्लभता का वर्णन करते हुए गणधर गौतम से कहा था कि हे गौतम! सब प्राणियों के लिए चिरकाल में मनुष्य जन्म दुर्लभ है, क्योंकि कर्मों का आवरण उतीव गहन है, अंततः **शेष पृष्ठ ४४ पर...**

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

पृष्ठ ४३ से... इस भव को पाकर एक क्षण के लिए भी प्रमाद तथा आलस नहीं करना चाहिए। अनेक गतियों और योनियों में भटकते जब जीव शुद्धि को प्राप्त करता है तब कहीं जाकर मनुष्य योनि प्राप्त होती है। महावीर स्वामी का कहना था कि आत्मा की सबसे बड़ी गलती अपने असली रूप को नहीं पहचानना है तथा यह केवल आत्मज्ञान प्राप्त करके ही ठीक की जा सकती है।

मनुष्य को अपने जीवन में जो धारण करना चाहिए वही धर्म है। धारण करने योग्य हिंसा, क्रूरता, कठोरता, अपवित्रता, अहंकार, क्रोध, असत्य, असंयम, व्यभिचार, परिग्रह आदि विकार हैं, यदि संसार का प्रत्येक व्यक्ति हिंसक हो जाए तो समाज का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा तथा सर्वत्र भय, अशांति एवं पाशविकता का साम्राज्य स्थापित हो जाएगा। संपूर्ण विश्व में एकमात्र जैन धर्म ही इस बात में आस्था रखता है कि प्रत्येक आत्मा में परमात्मा बनने की शक्ति विद्यमान है अर्थात् महावीर स्वामी की तरह ही प्रत्येक व्यक्ति जैन धर्म का ज्ञान प्राप्त कर उसमें सच्ची आस्था रख, उसके अनुसार आचरण कर पुण्योदय से उसे प्राप्त कर दुर्लभ मानव योनी का एकमात्र सच्चा व अंतिम सुख, संपूर्ण जीवन जन्म - मरण के बंधन से मुक्त होने वाले कर्म करते हुए मोक्ष महाफल पाने हेतु कदम बढ़ाना तथा उसे प्राप्त कर वीर महावीर बन दुर्लभ जीवन को सार्थक कर सकता है।

महावीर ने कोई ग्रंथ नहीं लिखा, उन्होंने जो उपदेश दिए, गणधरों ने उनका संकलन किया। वे संकलन ही शास्त्र बन गए। इनमें काल, लोक, जीव आदि के भेद-प्रभेदों का इतना विशुद्ध एवं सूक्ष्म विवेचन है कि यह एक विश्व कोष का विषय नहीं अपितु ज्ञान विज्ञान की शाखाओं प्रशाखाओं के अलग-अलग विश्व कोषों का समाहार है।

महावीर के सिद्धान्त बताते हैं कि वर्तमान के वर्तन (व्यवहार) को किस प्रकार से रखा जाए ताकि जीवन में शांति, मरण में समाधि, परलोक में सद्गति तथा परम्परा से परमगति पाई जा सके। आज के भौतिक युग में अशांत जनमानस को महावीर की पवित्र वाणी ही परम सुख और शांति प्रदान कर सकती है, यदि आज संसार के लोग महावीर के अहिंसा परमो धर्म, अपरिग्रह और अनेकांतवाद को अपना लें तो हर प्रकार की समस्याएं मिट सकती हैं, शांति स्थापित को सकती है और मानव सुखी रह सकता है। मानवीय गुणों की उपेक्षा के इस समय में महावीर के कल्याण का दिन हमसे अपने जातीय भेद भुलाकर सत्य से साक्षात का संदेश देता है।

संपूर्ण विश्व में 'जियो और जीने दो' का संदेश फैलाने वाले तीर्थंकर महावीर को शत् शत् नमन, महावीर स्वामी जी की जय हो।

-कोमल कुमार जैन
लुधियाना

May Lord Mahavir Bless You Abundantly &
May Your Life Be Filled With Peace,
Good Health, Prosperity & Compassion.

With Best Compliments

Nimesh N. Kampani

Address:- 141 - Maker Chamber-III, 13th Floor,
Nariman Point, Mumbai,
Maharashtra, Bharat - 400021

जय भिक्षु ।। ॐ अर्हम् ।। जय महाश्रमण
तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
सकल जैन समाज को हार्दिक शुभकामनायें

स्वर्गीय मातोश्री बदाम देवी व
स्वर्गीय पिताश्री मनोहर लाल जी सोनी के आशीर्वाद से...
-:: श्रद्धाप्रणत ::-
रमेश- ललिता- कार्तिक सोनी परिवार ठाणे (थामला)
हुनर कावेरी सन्नी जी मेहता
कावेरी ज्वेलर्स
7 साई धाम अपार्टमेंट, यशोधन नगर बस स्टाप के पास, ठाणे,
Mob : 9820053204
रमेश सोनी: अध्यक्ष अणुव्रत समिति मुंबई

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

भगवान महावीर के संदेश के साथ एकता का संकल्प

मुंबईः दक्षिण मुंबई स्थित यशवंतराव चव्हाण सेंटर के सभागार मे १२६ वर्ष पुरानी संस्था भारत जैन महामंडल का ५८वां राष्ट्रीय अधिवेशन और शपथ ग्रहण समारोह गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर राष्ट्रीय अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़ तथा उनकी पूरी राष्ट्रीय कार्यकारिणी ने पद और गोपनीयता की शपथ लेकर अपने कार्यकाल की औपचारिक शुरुआत की। समारोह मे निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष सीसी डांगी ने अपने तीन वर्ष के कार्यकाल की रिपोर्ट पेश करते हुए संगठन की उपलब्धियों की जानकारी दी। कार्यक्रम के

अध्यक्ष और राज्यसभा सांसद लहर सिंह सिरोया ने भविष्य में भारत जैन महामंडल का एक राष्ट्रीय कार्यक्रम दिल्ली में करने का प्रस्ताव रखा। उनके प्रस्ताव का समाज के लोगों ने स्वागत किया। अध्यक्ष ख्यालीलाल तातेड़ ने नई राष्ट्रीय कार्यकारिणी की घोषणा करते हुए बाबूलाल बाफना को महामंत्री, सुरेश आंचलिया को राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष, भूपेश कोठारी को राष्ट्रीय युवा अध्यक्ष, अमित रांका को मंत्री तथा तरुणा बोहरा को महिला विंग की राष्ट्रीय अध्यक्षा और आशा वडाला को मंत्री नियुक्त किया।

तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
सकल जैन समाज को हार्दिक शुभकामनायें

Ukchand Bafna
Mob: 8073301266
W B AGRO PRIVATE LTD
Goutam Industries, Plot No.63/1(U, near 1st Pause,
Tarihal Industrial Area, Tarihal, Hubballi,
Karnataka, Bharat- 580026

पतित पावन तरण तारण, हमारी फरियाद सुन लेना।
तेरे चरणों में मस्तक है, हमें अपना बना लेना।।

R.K. MARBLE GROUP
Corporate Office : Makrana Road, Madanganj-Kishangarh, Dist.Ajmer(Raj.)-305801
Tel : +91 1463 277777, 260101, Fax : +91 1463 250601
E-mail : info@rkmarble.com, Website : www.rkmarble.com

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

तीर्थंकर भगवान महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
सकल जैन समाज को हार्दिक शुभकामनायें

Madan Sundesha
Mob: 9819440779

MS FASHION

M.S. Fashion Wear Pvt. Ltd.

GOLDEN TROPHY WINNER FOR EXCELLENCE YEAR 2015-2016

AN ISO 9001: 2008 CERTIFIED COMPANY
"A GOVT. RECOGNISED ONE STAR EXPORT HOUSE"

Office-216, Subhshri Arcade, 2nd Floor, Opp. Shivaji Chowk, Jakeria Road, Malad (W), Mumbai, Maharashtra, Bharat- 400 064,
Tel.: +91 22-2888 0768/69, 2888 5122/23/24 25/
Email: madansundesha@hotmail.com | msgroup39@gmail.com
Web.: www.msfashionswear.com

जीयो और जीने दो के विचारक अहिंसा परमो धर्म
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

SHAKENDRA CHHAJED
Mob: 9869651177
Krish CHHAJED (MD)
Mob: 9372284408

CHHAJED
BUILDERS

1403, Ostwal Darshan, Bhayandar East, Maharashtra, Bharat- 401105, shakendrachhajed@gmail.com

जीवों को कमलजीवन देने आए तीर्थंकर महावीर के
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

अभय भाकचंद छाजेड़
भ्रमणध्वनि : 8107866868
जनरल सेक्रेटरी
महाराष्ट्र प्रदेश कांग्रेस कमिटी

क्यू - 323, आदिनाथ सोसायटी,
पूना-सतारा रोड़, पूना, महाराष्ट्र, भारत-411037

त्यागमूर्ति अहिंसा के अवतार, महावीर प्रभु तेरी जय-जयकार
जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएं

J.L. CHORARIA
&
FAMILY

CA Jawaharlal Choraria
Mob: 9433084855/ 7044019664

J.L. Choraria & Associates
Chartered Accountants

88, Manicktala Main Road, 8th Flor,
Kolkata, West Bengal, Bharat-700054
Email- jlchoraria23@rediffmail.com

भारत को 'भारत' ही बोला जाए Remove 'INDIA' Name From The Constitution

जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!!!

जय भारत! जय जिनेन्द्र!

जय गौ माता!

भारत को 'भारत' ही बोलेंगे INDIA नहीं

शकेंद्र वर्धमान छाजेड़
राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री भारत जैन महामंडल युवा शाखा
रतलाम निवासी-मुंबई प्रवासी
भ्रमणध्वनि: ९८६९६५११७७

शकेंद्र जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व के शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि तीर्थंकर महावीर स्वामी ने पूरे विश्व में शांति और अहिंसा स्थापित करने के लिए कई सिद्धांत प्रतिपादित किए, जो आज भी सार्थक है, उन सिद्धांतों को अपनाने की अत्यंत आवश्यकता है, जिसके माध्यम से ही विश्व में जो अराजकता और अशांति फैली है, वह समाप्त की जा सकती है। 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व के माध्यम से हम तीर्थंकर महावीर स्वामी का जन्मोत्सव मनाते ही हैं, साथ ही उनके बताए सिद्धांतों का अनुसरण भी करते हैं, जिससे अपने जीवन को एक लक्ष्य प्रदान किया जा सके। पूरे विश्व में फैले जैन समाज द्वारा 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व को बड़े ही उत्साह से मनाता है।

'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि तीर्थंकर महावीर स्वामी के सिद्धांत पूरे मानव समाज के लिए मार्गदर्शक है, उनके सिद्धांतों का अनुसरण करके ही विश्व में शांति स्थापित किया जा सकता है, जब जैन ही अपने में अलग-अलग बंटे रहेंगे, तो हम विश्व कल्याण की बात कैसे कर सकते हैं? इसीलिए महावीर के सिद्धांत और मूल्यों की रक्षा के लिए जैन समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है। 'जैन एकता' द्वारा कई संप्रदायों ने प्रेरणा भी ली है और समाज को संगठित करने का प्रयास भी कर रहे हैं। समाज संगठित होगा, तभी समाज विकसित होगा और देश विकसित होगा, इसी कड़ी में मुंबई के भायंदर में ३० सालों से दिगम्बर, श्वेताम्बर, मूर्तिपूजक, स्थानकवासी, तेरापंथ संप्रदाय 'महावीर जन्म कल्याणक' एक साथ मनाते हैं, शोभा यात्रा निकालते हैं, जिसमें पूरा समाज एकत्रित होता है, तीर्थंकर महावीर के सिद्धांतों का प्रचार-प्रसार किया जाता है, युवा भी जुड़ते हैं।

आज की युवा पीढ़ी को यदि आप अपने गुरु महाराज के सानिध्य में ले जाएं और उनके आशीर्वचनों का लाभ उठाएं तो युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज से अवश्य ही जुड़ेगा, जब तक हम अपनी जिम्मेदारी समझकर युवाओं को नहीं जोड़ेगें तो वह कैसे जुड़ेगें। आज की युवा पीढ़ी बहुत ही समझदार और स्पष्टवादी है, जैसे ही वे धर्म के मर्म को समझते हैं, तो धर्म के प्रति अधिक सक्रिय हो जाते हैं, यह भी देखा जाता है कि आज दीक्षा लेने वालों में युवाओं की संख्या सबसे अधिक है।

गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए, हमारे सनातन धर्म में गाय को बहुत महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है, उनकी पूजा की जाती है, गाय मानव जीवन में कई महत्वपूर्ण पहलुओं को फायदा पहुंचाती है, जो परंपरा पूर्वजों की भावनाएं रही है, उसे आने वाली पीढ़ी तक पहुंचाने के लिए गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।

'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि भारतीय भूखंड सभी धर्म में भरत क्षेत्र के नाम से जाना जाता है, जिसे चक्रवर्ती राजा भरत के नाम पर रखा गया है, इसलिए अपने देश का एक ही नाम और पहचान रहनी चाहिए 'भारत'!

शकेंद्र जी का परिवार मूलतः राजस्थान के जोधपुर के ग्रामीण क्षेत्र 'विरामी' से रहे हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा मध्य प्रदेश के 'रतलाम' में संपन्न हुई है, पिछले कई वर्षों से आप मुंबई में बसे हैं और बिल्डर (रियल स्टेट) के कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही समाजसेवा में विशेष रूचि रखते हुए कई सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों में विशेष पद पर कार्यरत हैं। मात्र १६ वर्ष की आयु में समता बालक-बालिका मंडल के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष और फिर महामंत्री और राष्ट्रीय अध्यक्ष बने, फिर श्री साधुमार्गी जैन समता युवा संघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष रहे, रोटरेक्ट क्लब में सचिव अध्यक्ष रहने के बाद डिस्ट्रीक्ट ३०४० के अध्यक्ष बने, श्री राजस्थानी जैन युवा संघ के अध्यक्ष रहे हैं, अभी सलाहकार हैं। वर्तमान में श्री अखिल भारतवर्षीय साधुमार्गी जैन संघ की कार्यकारिणी में विहार सेवा संयोजक है, श्री भारत जैन महामंडल के युवा शाखा में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पद पर कार्यरत हैं, भारत विकास परिषद के प्रांतीय सेवा संयोजक एवं कोरकमेटी के सदस्य पद पर भी सेवारत हैं, आप राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, लायंस क्लब मुंबई वेस्टर्न, जैन सोशल ग्रुप से भी जुड़े हैं, जिओ में डायरेक्टर और जीतो सें भी जुड़े हैं।

जय गौमाता! जय भारत!

-जिनागम

जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

रतनलाल सिंघी
व्यवसायी व समाजसेवी
लाडनूं निवासी-कोलकाता प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ९८३०७०८६६१

रतनलाल जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व सभी जैन संप्रदायों का सबसे प्रमुख पर्व है, क्योंकि इसी दिन जैन धर्म को ऊंचाई पर ले जाने वाले २४वें तीर्थंकर हमारे आराध्य महावीर स्वामी जी का जन्म उत्सव होता है, जिसे संपूर्ण समाज द्वारा उत्साह पूर्वक मनाया जाता है, इस महोत्सव पर जैन स्थानकों व मंदिरों पर विशेष आयोजन होता है, समाज द्वारा प्रभात फेरी या शोभायात्रा निकाली जाती है, जरूरतमंदों की सहायता की जाती है, अन्य कई धार्मिक व सामाजिक कार्यक्रम किए जाते हैं, इस पर्व को मनाने का उद्देश्य यही है कि तीर्थंकर महावीर के संदेशों को जन-जन तक पहुंचाया जाए।
'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि निश्चित रूप से हमारे समाज में 'एकता' होना बहुत जरूरी है। जैन एक ही हैं, भले ही हमारे पंथ और मार्ग अलग-अलग हों, पर सभी के मूल में तीर्थंकर महावीर के सिद्धांत हैं, सभी २४ तीर्थंकर को मानते हैं, जिन मुद्दों पर समाज में एकता स्थापित हो सकती है, उन मुद्दों को लेकर आगे बढ़े तो समाज में अवश्य एकता स्थापित होगी। आज के परिपेक्ष में जैन समाज में एकता होगी, तभी समाज आगे बढ़ेगा, सभी पर्व एक साथ, एक रूप में मनाये जाने चाहिए। पर्यूषण पर्व, संवत्सरी एक ही दिन मनाई जानी चाहिए, तभी अन्य समाज के सम्मुख हमारी एकता का संदेश जाएगा।
कई स्थानों पर देखा जा रहा है कि युवा पीढ़ी अपने धर्म और समाज के प्रति बहुत जागरुक है। आज के अभिभावक अपने बच्चों को जैन धर्म के मूल मंत्र सीखाने की चेष्टा करते हैं पर बच्चे जो सीखना चाहते हैं जो करना चाहते हैं वह हम नहीं दे पा रहे हैं, आज की युवा पीढ़ी बहुत ही शिक्षित और समझदार है, वह किसी चीज को अपनाने से पहले परखना और समझना चाहती है।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि विश्व स्तर पर अपनी पहचान 'भारत' से हो इसके लिए प्रयास करना होगा, पर यह राजनीतिक मुद्दा है। देश का प्राचीन नाम तो भारत ही था, इंडिया अंग्रेजों का दिया नाम है, अपनी वास्तविक पहचान को पुनर्स्थापित करना होगा।
रतनलाल जी मूलतः राजस्थान के नागौर जिले में स्थित 'लाडनूं' के निवासी हैं। आपका जन्म और शिक्षा यहीं संपन्न हुई है, पिछले ५० सालों से आप 'कोलकाता' बसे हैं और कारोबार से जुड़े रहे, वर्तमान में समाज क्षेत्र में सक्रिय हैं, उत्तर हावड़ा तेरापंथी सभा ट्रस्ट के २० सालों तक कोषाध्यक्ष रहे हैं, वर्तमान में कई सामाजिक संगठनों से जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत!
-जिनागम

उकचंद बाफना
अध्यक्ष स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हुबली
मोकलसर निवासी-हुबली प्रवासी
भ्रमणध्वनिः ८०७३३०१२६६

उकचंद जी 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व की शुभकामनाएं देते हुए कहते हैं कि समस्त जैन धर्मावलंबियों के लिए 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व बहुत ही महत्वपूर्ण है, इस पर्व के माध्यम से महावीर के संदेशों और आदर्शों को अपने जीवन में आत्मसात करने का प्रयास करते हैं, साथ ही जन जन तक पहुंचाने के लिए भी प्रार्थनाशील रहते हैं, इसीलिए आज भी इस पर्व की सार्थकता और महत्व बनी हुई है, हमारे हुबली क्षेत्र में जैन समाज द्वारा गुरु भगवंतों के सानिध्य में 'महावीर जन्म कल्याणक' पर्व मनाया जाता है।
इस बार हमारे यहां 'महावीर जन्म कल्याणक' राष्ट्रीय संत उपपर्वतक घोर तपस्वी परम पूज्य गुरुदेव श्री नरेश मुनि आदि ठाणा के सानिध्य में हो रहा है।
'जैन एकता' के संदर्भ में आपका कहना है कि समाज में एकता होना बहुत जरूरी है, इसके लिए सभी को मिलकर प्रयास करना होगा, हमारे सभी त्यौहार एक साथ मनाए जाने चाहिए। अलग-अलग मनाने से अन्य समाज के सम्मुख बहुत गलत संदेश जाता है, इसलिए समाज में 'एकता' होना जरूरी है।
आज की युवा पीढ़ी धर्म और समाज से दूर होती जा रही है और इसके कई कारण है, युवाओं को जोड़ना है तो उचित मार्गदर्शन देना होगा।
गाय को 'राष्ट्रमाता' का सम्मान अवश्य मिलना चाहिए।
'भारत को केवल 'भारत' ही बोला जाए' INDIA नहीं, एक राष्ट्र-एक नाम केवल 'भारत' राष्ट्रीय अभियान के संदर्भ में आपका कहना है कि हमारे देश के कई नाम है पर हमारे देश की वास्तविक पहचान 'भारत' है, जो सदियों से रही है, अतः हर भाषा में अपने देश का नाम 'भारत' ही रहना चाहिए।
उकचंद जी मूलतः राजस्थान के बालोतरा जिले में स्थित 'मोकलसर' के निवासी हैं। आपका जन्म और संपूर्ण शिक्षा कर्नाटक के हुबली में संपन्न हुई है, यहां आप कारोबार से जुड़े हैं, साथ ही सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय हैं। स्थानकवासी जैन श्रावक संघ हुबली के अध्यक्ष है। जैन कॉन्फ्रेंस से भी जुड़े हैं। जय गौमाता! जय भारत!
-जिनागम

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

आइये हम सभी 'जय जिनेन्द्र' के साथ 'जय भारत' से अपने सुधिजनों का अभिवादन करें। जय भारत!
INDIA को भारतीय संविधान से विलुप्त किया जाए
Remove INDIA Name From The Constitution
INDIA GATE का नाम 'भारतद्वार' लिखवायें

राष्ट्रमाता बनें
निवेदक: मैं भारत हूँ फाउंडेशन
मैं भारत हूँ फाउंडेशन
भारत को 'भारत' ही बोला जाए
www.mainbharathun.co.in

चंडकौशिक सर्प की कहानी

ज्ञान की खोज में महावीर नंगे पाँव एक स्थान से दूसरे स्थान विचरण करते हुए घनघोर तपस्या कर रहे थे। एक बार वह श्वेताम्बी नगरी जा रहे थे जिसका रास्ता एक घने जंगल से होकर गुजरता था, जिसमें चंडकौशिक नाम का एक भयंकर सर्प रहता था, उस सर्प के बारे में प्रसिद्ध था कि वह सदा क्रोध में रहता था और उसके देखने मात्र से ही पक्षी, जानवर या इंसान मृत हो जाते थे, महावीर उस जंगल की ओर बढे तो ग्रामीणों ने उन्हें चंडकौशिक के बारे में बताया और उधर न जाने का निवेदन किया, पर अहिंसा के मार्ग पर चलने वाले महावीर तो भयरहित थे, उन्हें किसी के प्रति नफरत नहीं थी और वे डर और नफरत को स्वयम के प्रति हिंसा मानते थे, उनके चेहरे पर एक तेज था और वे साक्षात करुणा की मूर्ती थे,

उन्होंने गाँव वालों को समझाया कि वे भयभीत ना हों और जंगल में प्रवेश कर गए।

कुछ देर चलने के बाद जंगल की हरियाली क्षीण पड़ने लगी और भूमि बंजर नज़र आने लगी, वहां के पेड़ पौधे मृत हो चुके थे और जीवन का नामोनिशान नहीं था।

महावीर समझ गए कि वह चंडकौशिक के इलाके में आ चुके हैं, वे वहीं रुक गए और ध्यान की मुद्रा में बैठ गए। महावीर के ह्रदय से प्रत्येक जीव के कल्याण के लिए शांति और करुणा बह रही थी।

महावीर की आहट सुन चंडकौशिक फौरन सतर्क हो गया और अपने बिल से बाहर निकला, महावीर को देखते ही वह क्रोध से लाल हो गया और मन ही मन सोचा, 'इस तुच्छ मनुष्य की यहाँ तक आने की हिम्मत कैसे हुई?' वह महावीर की ओर अपना फन ऊँचा कर फुंफकारने लगा पर महावीर तो शांतचित्त हो अपनी ध्यान मुद्रा में बैठे रहे और जरा भी विचलित नहीं हुए, यह देख चंडकौशिक और भी क्रोधित हो गया और उनकी ओर बढ़ते हुए अपना फन हिलाने लगा, महावीर अभी भी शांति से बैठे रहे और न भागने की कोशिश की ना भयभीत हुए, सर्प का क्रोध बढ़ता जा रहा था, उसने फ़ौरन अपना ज़हर महावीर के ऊपर उड़ेल दिया। ...पर ये क्या महावीर तो अभी भी ध्यानमग्न थे, उस घटक विष का उन पर कोई असर नहीं हो रहा था।

चंडकौशिक को विश्वास नहीं हो रहा था कि कोई मनुष्य उसके विष से बच सकता है, वह बिजली की गति से आगे बढ़ा और महावीर के अंगूठे में अपने दांत गड़ा दिए।

...पर ये क्या महावीर अभी भी ध्यानमग्न थे और उनके अंगूठे से खून की जगह दूध बह रहा था।

अब महावीर ने अपनी आँखें खोली, वह शांत थे उनके मुख पर न कोई भय था ना ही क्रोध, वे चंडकौशिक की आँखों में देखते हुए बोले उठो! उठो! चंडकौशिक सोचो तुम क्या कर रहे हो?

उनके वाणी में प्रेम और स्नेह था, चंडकौशिक ने इससे पहले कभी इतना निर्भय और वात्सल्यपूर्ण प्राणी नहीं देखा था, वह शांत हो गया, अचानक ही उसे अपने पिछले जन्म याद आने लगे, अपने क्रोध और अभिमान के कारण आज वह जिस स्थिति में पहुँच गया था, वह उसे ज्ञात हो गया। अचानक आये इस ज्ञान से उसका ह्रदय परिवर्तन हो गया वह प्रेम और अहिंसा का पुजारी बन गया। महावीर के जाने के बाद उसने चुपचाप अपना सिर बिल के अन्दर कर लिया, जबकि उसका बाकी का शरीर बाहर ही था।

धीरे-धीरे यह बात सभी को ज्ञात हो गयी कि चंडकौशिक बदल गया है, बहुत से लोग उसे नाग-देवता मान कर दूध, घी इत्यादि से पूजने लगे तो कई लोग जिन्होंने उसके विष के कारण अपने प्रियजन खोये थे, उस पर ईंट-पत्थर फेंकने लगे।

चंडकौशिक न क्रोधित हुआ न ही किसी का विरोध किया, लुहू-लुहान उसी अवस्था में पड़ा रहा। रक्त, दूध, मिष्टान आदि की वजह से जल्द ही वहां चींटियों के झुण्ड आ पहुंचे, चींटियों के काटने के बावजूद वह अपने स्थान से नहीं हिला, कारण यह था कि कहीं कोई चींटी दब कर मर ना जाए।

अपने इस आत्म संयम और भावनाओं पर नियंत्रण के कारण उसके कई पाप कर्म नष्ट हो गए और मृत्युपरांत वह स्वर्ग को प्राप्त हुआ।

तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएं

Vinod Jain
Mob:- 9766045328

VINAY TRADERS
Wholesale & Retail
All types Of Disposable & General Items

Gala No. 01, Shriji Kripa Building 305, Opp Dr. Ajay Dikshit,
Nazrana Compound, Bhiwandi, Dist. Thane Maharashtra, Bharat - 421302

जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!! जय जिनेन्द्र! जय जिनेन्द्र!! जय जिनेन्द्र!!!

Intensive

Investment Banking ♦ Family Office ♦ NBFC

www.intensivefiscal.com

~ Unique Advice. Capital Market Insight, Efficient Execution, Delivering Financial Growth

Recent IPO

~~~ Our Services ~~~

- Public Issue (IPO)
- M&A / Strategic Acquisition
- Wealth Management & Advisory
- Right Issue / Buy-Back
- Takeover / Open Offer
- Valuation & ESOP
- Private Equity
- QIP Placement
- Pre-IPO Placement
- Debt Syndication
- Amalgamation & Demerger
- Financial Engineering

Intensive Fiscal Services Private Limited

RO: - 914, Raheja Chambers, Free Press Journal Marg, Nariman Point, Mumbai –400021, India,
Tel: +91-22-22870443 / 44 / 45, **Contact Person:** Virendra Bajaj +91 9699292100
Email: admin@intensivefiscal.com , virendra@intensivefiscal.com
Web: www.intensivefiscal.com

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें, सभी जैन पंथी 'मिलकर'
रहें महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर हार्दिक शुभकामनाएँ

SHAIRU GEMS DIAMONDS PVT. LTD.

Importers & Exporters, Diamond Manufacturers

DE-9012 A, (Entrance From DC), 9th Floor,
Bharat Diamond Bourse, Bandra Kurla Complex,
Bandra East, Mumbai, Maharashtra, Bharat-400051,
दूरध्वनि : 00-91-22-40505050 : 00-91-22-66460999
Fax : 00-91-22-23633054
अणुडाक : info@shairugems.net
अंतरताना : www.shairugems.com

जीयो और जीने दो के विचारक
तीर्थंकर महावीर के जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनायें

MANOJ JAIN
Mob.: 9375183653

NAIVE JAIN
Mob.: 7874972678

Manoj® SILK MILLS

Regd. T.M. No. 1519771
EVERY FABRIC COUNTS
Mfg Of Dyed & Digital Printed Fabrics With
Value Addition And Embroidery Garment

GSTIN : 24ACYPJ2472M2ZY

Manoj® SILK MILLS

SALES : E-5670-71 Lift No 17, 3rd Floor,
Raghukool Textile Market, Ring Road, Surat.
E-mail : manojsilkmills5670@gmail.com

संसार के हर प्राणि 'सुखी' रहें,
सभी जैन पंथी 'मिलकर' रहें
महावीर जन्म कल्याणक पर्व पर
हार्दिक शुभकामनाएँ

कमलसिंह रामपुरिया

अध्यक्ष-जैन श्वेताम्बर सोसायटी
भ्रमणध्वनि: ९८३१००९४७०

17/3, मुखराम कानोडिया रोड, हावड़ा, प. बंगाल, भारत-711101
दूरध्वनि-033-26667212

Postal Registration Number - MCN/192/2024-2026
WPP License No. MR/Tech/WPP-319/North/2024-26
Published on 09th March 2026 & Posting On 10th & 12th of Every Month
Posted at Marol Bazar Post Office, Mumbai - 400 059

ADD Gel®
LEADERS IN WRITING TECHNOLOGY

24 SHADES

CALLIGRAPHY
GIFT OF CREATIVITY

Best Gift for Birthday

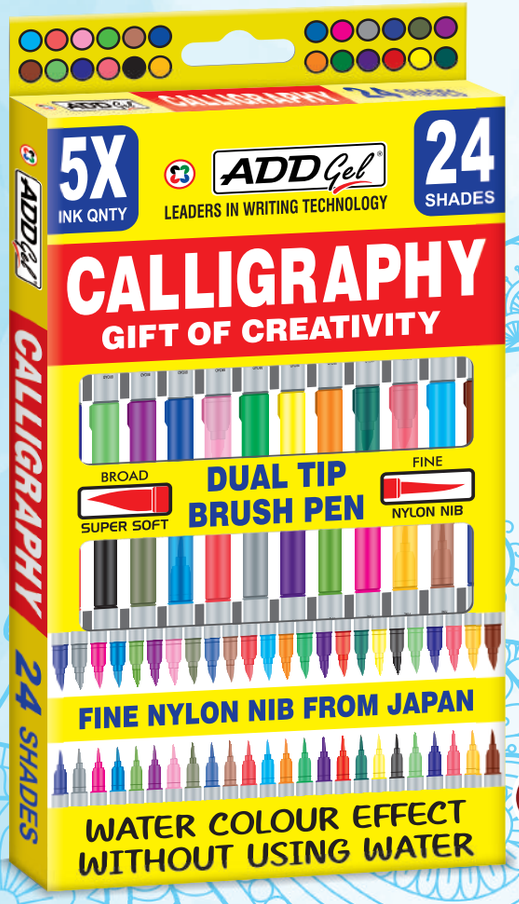

FINE NYLON NIB FROM JAPAN

MRP ₹450/- PER PACK

BROAD
SUPER SOFT
FINE
NYLON NIB

Make in India

www.shop.addpens.com

गेलार्ड पब्लिकेशन्स प्राइवेट लिमिटेड व संपादक, मुद्रक व प्रकाशक बिजय कुमार जैन, बी-217, हिंद सौराष्ट्र इंडस्ट्रियल इस्टेट, मरोल, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400 059, टेलीफैक्स-022-2850 9999 अणु डाक -mailgaylordgroup@gmail.com, अन्तरताना : www.jinagam.co.in, द्वारा विनय ग्राफिक्स, युनिट नं 13, रवी इन्ड. को.-ऑप. सोसाइटी लि., 25 महल इन्ड ईस्टेट, महाकाली केव्हज रोड, अंधेरी पूर्व, मुम्बई, महाराष्ट्र, भारत-400093 से मुद्रित करवाकर प्रकाशित किया गया।
RNI NO. MAHHIN/2006/19598